महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

पुरातत्त्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र

भाग २

पाषाण प्रतिमाएं

485

रायपुर
१९६० ईस्वी : १८८२ शक

मुखचित्र

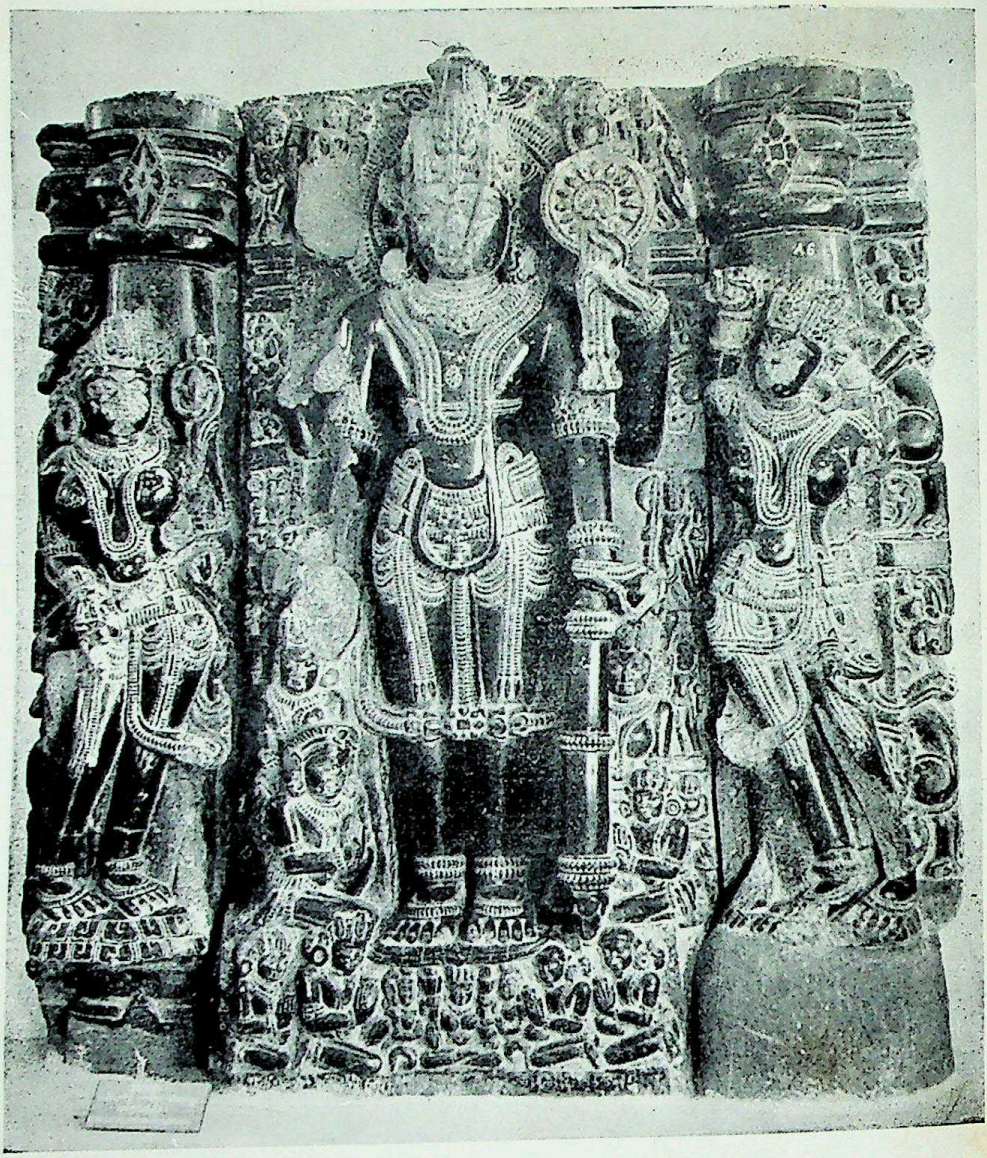

विष्णु; १२वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

पुरातत्त्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र

भाग २

पाषाण - प्रतिमाएं

485
13.5.60
क्रमांक
प्राप्ति तिथि
विभाग
अंक
MUSEUM, LIBRARY

बालचन्द्र जैन
एम० ए० साहित्यशास्त्री
सहायक संग्रहाध्यक्ष

रायपुर
१९६० ईस्वी : १८८२ शक

प्रकाशक—
सहायक संग्रहाध्यक्ष,
महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय,
रायपुर, मध्यप्रदेश।

भारत शासन की वित्तीय सहायता से
सहायक संग्रहाध्यक्ष द्वारा संकलित और प्रकाशित

069.954

मुख्य छायाचित्रकार—
विरदी स्टूडियो रायपुर।

ब्लाक निर्माता और मुद्रक—
सिंघई मौजीलाल एण्ड सन्स
जबलपुर।

निवेदन

रायपुर स्थित महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय में संग्रहीत पुरातत्त्व सामग्री के विवरणात्मक सूचीपत्र प्रकाशित करने की योजना के अनुसार (१) प्रागैतिहासिक वस्तुओं, (२) पाषाण प्रतिमाओं, (३) धातु प्रतिमाओं, (४) मृण्मूर्तियों, (५) सिक्कों, (६) उत्कीर्ण-लेखों, (७) हस्तलिखित पोथियों और (८) शस्त्रास्त्र तथा अन्य फुटकर सामग्री के अलग अलग सूचीपत्र तैयार किये जा रहे हैं जिनमें यथोक्त प्रकार की कला सामग्री के विषय में विस्तार से विवरण दिये जायंगे। प्रस्तुत सूचीपत्र इस माला का दूसरा ग्रन्थ है। इसमें संग्रहालय के संग्रह की समस्त पाषाण प्रतिमाओं को सम्मिलित किया गया है। माला का तीसरा ग्रन्थ जिसमें धातु प्रतिमाओं का विवरण है, इसके साथ ही अलग से प्रकाशित हो रहा है। अन्य सूचीपत्र यथासमय प्रकाशित होंगे।

संग्रहालय में संग्रहीत पाषाण प्रतिमाएं मध्यकाल अथवा उसके पश्चात्काल की हैं। उनका संग्रह क्षेत्रीय आधार पर हुआ है जो रायपुर, बिलासपुर, सिरगुजा और जबलपुर जिलों तक ही सीमित रहा है। इन्हीं से लगे हुये अन्य जिलों में भी पुरातत्त्व सामग्री की बहुलता है किन्तु खेद की बात है कि अनेक कारणों से वह कला सामग्री संग्रहालय को प्राप्त नहीं हो पायी है।

इस सूचीपत्र के तैयार करने में मुझे अपने कार्यालय के कर्मचारियों से बड़ी सहायता मिली है तदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूं। प्रतिमाओं के छायाचित्र तैयार करने में रायपुर के विरदी स्टूडियो के श्री दिलीप विरदी ने काफी श्रम किया है, वे धन्यवादार्ह हैं। ग्रन्थ की सुन्दर और सुरुचिपूर्ण छपाई का श्रेय सिंघई मौजीलाल एण्ड सन्स, जबलपुर के श्री अमृत लाल परवार को है जिनके उत्साह और लगन के फलस्वरूप कम समय में ही इस ग्रन्थ का इतने अच्छे रूप में प्रकाशन संभव हुआ है।

मार्च १९६०
फाल्गुन १८८२

बालचन्द्र जैन
स० संग्रहाध्यक्ष

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
पाण्डुवंश कालीन प्रतिमाएं (आठवीं-नौवीं शती ईस्वी)	१
डाहलमण्डलीय कलचुरि कालीन प्रतिमाएं (दसवीं-ग्यारहवीं शती ईस्वी) ...	९
दक्षिण कोसलीय कलचुरि कालीन प्रतिमाएं (बारहवीं शती ईस्वी) ...	३१
गोंड़ कालीन प्रतिमाएं (सोलहवीं-सत्रहवीं शती ईस्वी)	४०
सहायक ग्रन्थ	४३

चित्रफलकों का विवरण

मुखचित्र विष्णु; बारहवीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

एक क. तारा और अवलोकितेश्वर के साथ बुद्ध; ९ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपर।

ख. वरद मुद्रा में बुद्ध; ११ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

दो क. मंजुश्री; ८ वीं-९ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

ख. मंजुश्री; ८ वीं-९वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

तीन क. पार्श्वनाथ; ९ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

ख. कल्याणसुंदरमूर्ति शिव; ९ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।

चार क. गंगा; ८ वीं-९ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

ख. स्त्री प्रतिमा युक्त स्तंभ; ८ वीं-९ वीं शती ईस्वी; धमतरी, जिला रायपुर।

ग. नागराज; ८ वीं-९ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

पांच क. शिवमंदिर के द्वार की चौखट का खंड; ८ वीं-९ वीं शती ईस्वी; धमतरी, जिला रायपुर।

ख. भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

छह क. ऋषभनाथ; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

ख. अजितनाथ और संभवनाथ; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

सात क. पुष्पदंत और शीतलनाथ; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

ख. पार्श्वनाथ; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

आठ क. महावीर; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

ख. सहस्रकूट जिन चैत्यालय; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

नौ क. अम्बिका; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

ख. अम्बिका; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

दस क. शिव; १०वीं-११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

ख. भैरव; ११ वीं शती ईस्वी; बिलहरी, जिला जबलपुर।

ग्यारह क. उमामहेश्वर; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. पार्वती; १० वीं-११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

बारह क. नारायण; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. गोविन्द; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ग. मधुसूदन; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई जिला जबलपुर।

तेरह क. अच्युत; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. नृसिंह; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

चौदह क. त्रिविक्रम; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. गरुडनारायण; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

पंद्रह क. ब्रह्मा; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. सूर्य; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

सोलह क. चौखट का खण्ड; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. गजशार्दूल; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

सत्रह क. सुरसुन्दरी; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।
ख. सुरसुन्दरी; १० वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर।

अठारह क. ऋषभनाथ; १२ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।
ख. चन्द्रप्रभ; १२ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।

उन्नीस क. उमामहेश्वर; १२ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।
ख. कार्त्तिकेय; १२ वीं शती ईस्वी; गोमरी, जिला बिलासपुर।

बीस क. विष्णु; ११ वीं शती ईस्वी; डीपाडीह, जिला सिरगुजा।
ख. पार्वती; ११ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

इक्कीस क. राजपुरुष; १२ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।
ख. चामरधारिणी; १२ वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर।

बाईस क. गोंड़ योद्धा; १६ वीं-१७ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।
ख. गोंड़ योद्धा; १६ वीं-१७ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

तेईस क. गोंड़ सिपाही; १६ वीं-१७ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।
ख. गोंड़ सिपाही; १६ वीं-१७ वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर।

चौबीस तीन बंदर; १६ वीं-१७ वीं शती ईस्वी; राजनांदगांव, जिला दुर्ग।

पुरातत्त्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का सूचीपत्र

पाषाण प्रतिमाएं

पाण्डुवंशकालीन प्रतिमाएं

(आठवीं-नौवीं शती ईस्वी)

बौद्ध

१. भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध, (३८३९), ३० से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

सिरपुर उत्खनन में पंचम विहार में प्राप्त इस खण्डित प्रतिमा में बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में आसीन हैं। उन का दायां हाथ भूमि का स्पर्श कर रहा है और बायें हाथ में संभवतः भिक्षापात्र है जो उनकी जांघ पर आश्रित है। प्रतिमा पर आठवीं-नौवीं शताब्दी के कुटिल अक्षरों में एक लेख उत्कीर्ण है; वह भी खण्डित हो गया है।

२. भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध, (३८३३), २५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह प्रतिमा पीले रंग के बलुवा पत्थर की है। इसमें बुद्ध कमल पर पद्मासन में बैठे हुये दिखाई देते हैं। पाषाण के अत्यन्त गल जाने से हाथ की मुद्राओं का ठीक से पता नहीं चलता।

३. खंडित बुद्ध प्रतिमा, (३८५१), ३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह किसी पद्मासनासीन बुद्ध प्रतिमा का खण्डित भाग है जिसमें बुद्ध के पैर और दोनों हाथों के भाग दिखाई देते हैं।

४. धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध, (३८२९), ४१ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल रंग के बलुवा पत्थर से निर्मित इस प्रतिमा में बुद्ध धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा में बैठे हैं। उनका दायां पैर खण्डित हो गया है। प्रतिमा की कारीगरी सुन्दर और परिपूर्ण है।

५. धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध, (३८५०), ८ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर का बना यह पट्ट सिरपुर के पांचवें विहार के उत्खनन में मिला था। इसमें बुद्ध को बोधिवृक्ष के नीचे धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में दिखाया गया है।

बुद्ध के दायें ओर अवलोकितेश्वर खड़े हैं जिनके बायें हाथ में कमलनाल है। बुद्ध के दायें ओर वज्रपाणि की प्रतिमा है। पट्ट पर तीन पंक्तियों का एक लेख उत्कीर्ण है जिसमें बौद्धों का बीजमंत्र 'ये धर्मा' आदि पढ़ा जाता है।

६. ध्यानी बुद्ध, (३८२८), १७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर की बनी इस छोटी प्रतिमा में बुद्ध अशोक वृक्ष के नीचे पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हुये हैं। नीचे उत्कीर्ण छह पंक्तियों के लेख में 'ये धर्मा' आदि बौद्ध मंत्र पढ़ा जाता है।

७. बैठे बुद्ध, (३८३४); ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

बुद्ध की पद्मासनासीन प्रतिमा का खण्डित भाग है। उनका बायां हाथ गोद में रखा और संघाटी का छोर पकड़े हुये दिखाई देता है।

८. बैठे बुद्ध, (३८३५), २३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह प्रतिमा पीले रंग के बलुवा पत्थर की है किन्तु अत्यन्त खराब अवस्था में है। इसके नीचे के भाग में छह पंक्तियों का खण्डित लेख उत्कीर्ण है। वह भी पूरा नहीं पढ़ा जा सकता। पहली चार पंक्तियों में ये धर्मा आदि बौद्ध मंत्र और बाद की दो पंक्तियों में कुमार नामक किसी व्यक्ति के दान का उल्लेख जान पड़ता है।

९. अवलोकितेश्वर और तारा के साथ बुद्ध, (३७८५), २८ से० मी०, सिरपुर उत्खनन (चित्रफलक एक-क)

लाल रंग के बलुवा पत्थर के इस पट्ट में बुद्ध कमल पर खड़े हुये हैं। उनका दायां हाथ अभयमुद्रा में है और बायें हाथ में संघाटी का छोर है। बुद्ध के मस्तक के पीछे प्रभामण्डल है। बुद्ध के एक ओर अवलोकितेश्वर और दूसरी ओर तारा खड़ी है। वे दोनों भी कमल पर स्थित हैं और उनके पीछे प्रभामण्डल है। अवलोकितेश्वर के मुकुट पर अमिताभ की प्रतिमा है। अवलोकितेश्वर का दायां हाथ तो वरद मुद्रा में है और उनके बायें हाथ में कमलनाल है। तारा भी कमल पर खड़ी है। उसका मुख खण्डित है। उसके दायें हाथ में मातुलुङ्ग और बायें हाथ में कमल है।

नीचे दो पंक्तियों का लेख उत्कीर्ण है जिसमें बौद्ध मंत्र ये धर्मा आदि पढ़ा जाता है

१०. अवलोकितेश्वर, (३८३०), ५० से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

अवलोकितेश्वर चौकी पर सम्मुख खड़े हैं। उनके बायें हाथ में कमलयष्टि और दायां हाथ वरदमुद्रा में है। मस्तक के पीछे गोल प्रभामण्डल है। दोनों ओर एक एक परिचारक है।

११. अवलोकितेश्वर, (३८३१), २९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह लाल रंग के बलुवा पत्थर की प्रतिमा सिरपुर के पंचम विहार में प्राप्त हुई थी। इसमें अवलोकितेश्वर कमल पर आसीन हैं। उनका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और बायें हाथ में कमलनाल है। प्रतिमा बहुत ही खराब हालत में है।

१२. अवलोकितेश्वर, (३८२९), ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

प्रतिमा खण्डित है। इसमें अवलोकितेश्वर सम्मुख खड़े हैं

१३. मंजुश्री, (३८४२), ३१ से० मी०, सिरपुर उत्खनन। (चित्रफलक दो-क)

पीले रंग के बलुवा पत्थर की बनी यह प्रतिमा बायें भाग में किञ्चित खण्डित है। इसमें बौद्धों के विद्यादेव मंजुश्री कमल पर बैठे हुये हैं। उनका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और बायें हाथ में कमलनाल है जिसके शीर्षभाग पर पोथी आश्रित है जो मंजुश्री की खास पहिचान है। मंजुश्री ऊंचा मुकुट पहने हैं, जिसके सामने के हिस्से में बीच में बड़ा सा रत्न जड़ा है। गले के आभूषण में बघनखा है और तन पर यज्ञोपवीत पड़ा है। दायें कान में पहना हुआ कुण्डल वृत्ताकार है किन्तु बायें कान में पत्र-कुण्डल हैं। मंजुश्री की लम्बी लम्बी जटाएं उनके कंधों तक लटक रही हैं।

१४. मंजुश्री, (३८४९), ७$\frac{१}{२}$ से० मी०, सिरपुर उत्खनन। (चित्रफलक दो-ख)

हरे रंग के मुलायम पत्थर की बनी यह प्रतिमा सिरपुर की सुख्यात धातु प्रतिमाओं की कोटि की है। इसमें मंजुश्री कमल पर ललित आसन में बैठे हुये हैं। उनका एक हाथ व्याख्यान मुद्रा में है और दूसरे में कमलदण्ड है।

मंजुश्री अनेक आभूषण धारण किये हुये हैं। उनके गले में मोतीमाला और हार हैं जिसमें बघनखा आदि जड़े हैं। तन पर यज्ञोपवीत पड़ा है; बायें कान में पत्रकुण्डल और दायें कान में किरीट कुण्डल; हाथों में भुजबंध और कमर में कटिसूत्र बंधा है।

पीछे एक गोल प्रभामण्डल है जिसके निचले भाग में चार पंक्तियों के एक लेख में बौद्धों का बीजमंत्र ये धर्मा आदि उत्कीर्ण है।

१५. जंभाल, (३८२१), ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पीले बलुवा पत्थर की छोटी सी खण्डित प्रतिमा जिसमें बड़ी तोंद वाले जंभाल की आकृति है। उनके पीछे प्रभामण्डल है।

१६. चुण्डा, (३८२४), २९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर की यह छोटी सी प्रतिमा सिरपुर के पंचम विहार की खुदाई में प्राप्त हुई थी। इसमें चुण्डा देवी कमलासन पर बैठी हुई है। उसके चार हाथ हैं, जिनमें से दायें ओर का निचला हाथ वरद मुद्रा में है।, उसी तरफ के ऊपर के हाथ में अक्षसूत्र है जबकि बायें तरफ के निचले हाथ में भिक्षापात्र दिखता है, चौथे हाथ का आयुध स्पष्ट नहीं है।

देवी के गले में मोतियों की माला पड़ी है जो उसके उन्नत स्तनों पर झूल रही है। दायें कान में वृत्ताकार कुण्डल और बायें कान में मकर कुण्डल हैं। चौकी के निचले भाग में एक भक्त है।

१७. बौद्ध देवता ?, (३८३२), २६ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

प्रतिमा का पत्थर बहुत अधिक गल जाने से इस पीले रंग के बलुवा पत्थर की प्रतिमा में पद्मासन में बैठे देवता की पहिचान नहीं हो पाती।

१८. चरणचौकी, (३८४३), ३४ से० मी० लम्बाई, १३ से० मी० ऊंचाई, सिरपुर उत्खनन।

पीले रंग के बलुवा पत्थर की बनी यह किसी विशाल बौद्ध प्रतिमा की चरण चोकी जान पड़ती है। यद्यपि काल के दुष्प्रभाव से इसका पाषाण बहुत अधिक गल कर नष्ट हो गया है, फिर भी इसकी कारीगरी मनोरंजक है।

सामने के भाग में कमल पर बैठी तीन स्त्री प्रतिमाएं हैं, जिनका भार यक्ष उठा रहे हैं। मध्य में बैठी स्त्री पद्मासन में स्थित है। उसके चार हाथ हैं, जिनमें से निचला दायां हाथ गोद में रखा हुआ है; उपरले दायें हाथ में अक्षसूत्र है जबकि बायें ओर के उपरले हाथ में कमल है; निचले बायें हाथ में कपाल या भिक्षापात्र है। इसलिये प्रतिमा को चुण्डा की प्रतिमा कहा जा सकता है।

चुण्डा के दायें ओर की स्त्री अर्धपर्यंक आसन में बैठी है। उसका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और बायें हाथ में कमलनाल है। बायें ओर की स्त्री अपने बायें हाथ में तो कमलनाल ही लिए है किन्तु उसका दायां हाथ अभयमुद्रा में है।

ऊपर वर्णित तीन स्त्री प्रतिमाओं के दोनों ओर एक एक गजशार्दूल है। उसके बाद एक एक स्तंभ है। बायें ओर की पट्टी पर एक पुरुष बैठा है जो संभवतः जंभाल है। दायें ओर की पट्टी पर स्त्री प्रतिमा है जिसका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और उसके बायें हाथ में कमलनाल है।

जैन

१९. पार्श्वनाथ, (०००३), १०८ से० मी०, सिरपुर। (चित्रफलक तीन-क)

तेईसवें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनके केश घुंघराले एवं उष्णीषबद्ध हैं, कान की लौंड़ी लम्बी और छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न है। तीर्थंकर के पीठ पीछे उनका लांछन नाग तकिया के रूप में कुण्डली मारे बैठा है जिसके सातों फन उन के ऊपर छत्र की भांति तने हुये हैं।

शैव

२०. कल्याणसुंदरमूर्ति शिव, (००११), १५४.५ से० मी०, रतनपुर। (चित्रफलक तीन-ख)

इस प्रतिमा में शिव और पार्वती के विवाह का दृश्य है। दोनों एक दूसरे के सम्मुख खड़े हैं। शिव के चार हाथ हैं जिनमें से तीन स्पष्ट दिखलाई देते हैं। उनके दायें उपरले हाथ में सर्प है और दायें निचले हाथ से पार्वती का हाथ ग्रहण कर रहे हैं जबकि बायां उपरला हाथ पार्वती के गले पर पड़ा है। पार्वती के दो हाथ हैं किन्तु दोनों ही खण्डित हो गये हैं। शिव के मस्तक पर जटामुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार और एकावली तथा हाथों में कंकण आदि आभूषण हैं। पार्वती का जूड़ा बंधा हुआ है जिसमें मुक्तामाला लपेटी हुई है। उनके शरीर पर भी अन्य अनेक आभूषण हैं।

शिवपार्वती चौकी पर खड़े हैं। उनके ठीक नीचे शिव का वाहन नन्दी है। शिव के दाहने अग्निकुण्ड है जिसके समीप ऊंचे आसन पर बैठे ब्रह्मा मंत्रपाठ कर रहे हैं। वर और वधू पक्ष के लोग चारों ओर खड़े हैं, उनमें अनेक देवता, गंधर्व और शिव के गण भी हैं किन्तु प्रतिमा के अस्पष्ट हो जाने के कारण वे पहचाने नहीं जाते।

२१. उमामहेश्वर, (०५४७), १३ से० मी०, बिलासपुर जिला।

इस खंडित पट्ट पर लीलासन में बैठे उमामहेश्वर की प्रतिमा है। शिव नन्दी पर आसीन हैं और पार्वती शिव की जांघ पर बैठी हैं। शिव के दाहने एक गण खड़ा है जिसके नीचे एक और खण्डित गण है।

२२. गणेश, (३७७३), ६० से० मी०, सिरपुर।

प्रकृति के दुष्प्रभाव से गली इस प्रतिमा में गणेश आसन पर बैठे हैं। उनके एक हाथ में मोदक है।

विविध

२३. गंगा ?, (०५६०), १४५ से० मी०; सिरपुर। (चित्रफलक चार-क)

यह किसी मंदिर के द्वार की चौखट का एक पाख जान पड़ता है जिस पर गंगा सम्मुख खड़ी है। नदी देवी के दो हाथ हैं किन्तु दोनों ही खण्डित हैं। उसके मस्तक के ऊपर एकहरा छत्र है और पीछे प्रभामण्डल। गंगा के केश गुम्फित हैं, उसके मस्तक पर मुकुट, कानों में कर्णफूल, गले में हार, एकावली तथा दुलड़ी मुक्तामाला, हाथों में बाजूबंद और कमर में मेखला है। उसके दोनों ओर एक एक परिचारिका खड़ी है। पृष्ठभूमि में नदी का दृश्य है। उसमें दाहिने और बायें, दोनों ओर, अनेक हंस पक्षी अपनी अपनी चोंच में मुक्तामालाएं दबाये उड़ रहे हैं।

२४. चौखट का बायां पाख, (०५०९), १५२से० मी०, धमतरी। (चित्रफलक चार-ख)

इस पाख पर सामने और दाहने ओर नक्काशी है। पाख का निचला हिस्सा खंडित है। सामने की ओर एक चौकोर स्तंभ बना है जिसके नीचे त्रिभंगमुद्रा में एक स्त्री खड़ी है। उसके पैर खण्डित हैं। स्त्री अनेक आभूषण धारण किये हुये हैं और उसके दाहिने हाथ में एक कमल है। स्तंभ के शीर्षभाग पर एक विमान है जहां मुर्गों की लड़ाई का आनंद लेते हुए दो पुरुषों का दृश्य है।

२५. चौखट का दायां पाख, (०५५८), १७८ से० मी०, सिरपुर।

इस पाख पर द्वारपालिका सम्मुख खड़ी है। उसका केशविन्यास आकर्षक है। उसके कान, हाथ और कमर में विभिन्न आभूषण हैं; एक हाथ में कमल और दूसरे में चंवरी है। द्वारपालिका के मस्तक के ऊपर के भाग में बेलबूटे और पाख के दायें और बायें भाग पर कमल तथा अर्धकमल की योजना है।

२६. चौखट का बायां पाख, (०५५९), १८० से० मी०, सिरपुर।

उपरोक्त क्रमांक २५ के समान।

२७. शिवमंदिर के द्वार की चौखट, (०५०८), २६७ से० मी०, धमतरी। (चित्रफलक पांच-क)

इस सम्पूर्ण चौखट में दो पाखों पर स्थित आड़े करगहने पर एक आड़ी सोहावटी रक्खी हुई है। पाखों की ऊंचाई १९३ से० मी०, चौड़ाई ४८ से० मी० और मोटाई २४ से० मी० है। करगहने की लम्बाई १६४ से० मी०, ऊंचाई ४८ से० मी० और मोटाई २० से० मी० है और उसी प्रकार सोहावटी की लम्बाई २४४ से० मी०, ऊंचाई २४ से० मी० और मोटाई ३७ से० मी० है।

सोहावटी पर मध्य में शिव की अर्धप्रतिमा है। वह अलंकृत चौकी पर स्थित है। शिव के भाल पर उनका तृतीय नेत्र है। सामने नन्दी है। दोनों ओर हाथ जोड़े एक नाग खड़ा है जिसके तन का ऊपरी भाग खण्डित है। फिर दोनों ओर दो दो नागपुरुष हैं। इन सभी नागों की दुमें लम्बी और परस्पर गुंथी हुई हैं। करगहने का सामने वाला शीर्षभाग किञ्चित् बढ़ा हुआ है जिससे वह चौकोर दीवारगीर जैसा बन गया है। करगहने पर पुष्पमालाएं, फुल्ल कमल तथा अर्धकमल की नक्काशी है। उसी प्रकार पाखों के सामने और भीतरवाले भाग पर नक्काशी है जिसमें तरह तरह के बेलबूटे, कलश, मकर और अर्धकमल आदि देखे जाते हैं। बायें पाख का ऊपरी भाग किञ्चत खण्डित है।

२८. नागराज, (०५५६), २१६ से० मी०, सिरपुर। (चित्रफलक चार-ग)

द्वार की चौखट के इस बायें पाख पर नागराज खड़े हैं। उनका शरीर मानवाकार है किन्तु मस्तक के ऊपर सप्तफण का छत्र है। नागराज, कर्णाभरण, हार और यज्ञोपवीत धारण किये हुये हैं। वे पुष्पमाला लिये है।

२९. नागराज, (०५५७), १८०.५ से० मी०, सिरपुर।

द्वार की चौखट के इस दायें पाख पर नागराज ऊपर के समान सम्मुख खड़े हैं। उनके पैर खण्डित हैं

३०. स्तंभ, (०५१६), २३० से० मी०, देवकूट।

इस स्तंभ की चौकी चौकोन है; उसपर लतापत्र, कलश, कमल और अर्धकमल आदि अलंकरण बनाये गये हैं। दण्डभाग पर गुंथे नाग हैं जो अपने फन ऊपर को उठाकर फैलाये हुये हैं, स्तंभ के शीर्षभाग पर बेलबूटे और लतापत्रयुक्त कलश बने हैं।

३१. स्तंभ, (२४०८), १५७ से० मी०, मल्लार।

इस छोटे स्तंभ पर ईहामृग, कीचक, पक्षी और अनेक बेलें हैं।

३२. चौकी, (०५१८), ५६ से० मी०, संभवतः सिरपुर।

चौकी के तीन ओर एक एक नागपुरुष बैठे हैं जिनके मस्तक पर फण हैं।

३३. विभूतिपट्ट, (०५४८), ६ × ६ से० मी०, बिलासपुर जिला।

इस खंडित पूजापट्ट पर कमल की आकृति बनी है।

३४. विभूतिपट्ट, (०५४९), ८ × ८ से० मी०, बिलासपुर जिला।

इस खंडित पूजापट्ट पर हाथी की आकृति बनी है।

३५. चौखट का खंड, (०५१९), ४४ से० मी०; अज्ञात।

इस खण्ड पर एक ओर नक्काशी है।

३६. चौखट का खंड, (०५२०), ४४ से० मी०, अज्ञात।

एक ओर नक्काशी है।

३७. मस्तक; (२७२३); ४० से० मी० बिलासपुर जिला।

किसी विशाल प्रतिमा का खंडित मस्तक।

३८. विभूतिपट्ट, (३७८६), २७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

यह और नीचे वर्णित सभी विभूतिपट्ट लाल बलुवा पत्थर के हैं और आकार में चौकोर हैं। इन सभी में बीचों बीच पवित्र विभूति रखने के लिये गोल कटोरी है तथा उसी प्रकार चारों कोनों में भी कमल दल के आकार की छोटी छोटी कटोरियां हैं। बीच की जगह में हाथियों का जोड़ा, घोड़ों का जोड़ा, हिरणों का जोड़ा, मत्स्य आदि हैं।

३९. विभूतिपट्ट, (३७८७), ३२ से० मी, सिरपुर उत्खनन ।

इसमें तरह तरह के अलंकरण हैं जो अनेक टुकड़ों में खण्डित हैं।

४०. विभूतिपट्ट, (३७८८), २२ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

खण्डित, कमल आदि अलंकरण ।

४१. विभूतिपट्ट, (३८११), २२ से० मी०; सिरपुर उत्खनन ।

खण्डित कमल, मत्स्य आदि अलंकरण ।

४२. विभूतिपट्ट, (३८१२), १६ से० मी, सिरपुर उत्खनन ।

उपरोक्त प्रकार ।

४३. विभूतिपट्ट, (३८१५), (अनेक टुकड़ों में) सिरपुर उत्खनन ।

बिलकुल खण्डित ।

४४. विभूतिपट्ट, (३८४५), १८ से० मी, सिरपुर उत्खनन ।

कमल,हरिण आदि अलंकरण ।

४५. पट्ट, (३८१७), २० से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

खण्डित, केवल एक हाथी की आकृति दिखाई पड़ती है ।

४६. पट्ट, (३८१०), ९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

अत्यन्त खण्डित हालत में ।

४७. नागपट्ट, (३८४६), १५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

हरे रंग के सलेटी पत्थर पर सम्मुख फण फैलाये नाग की आकृति है ।

४८. पट्ट, (३८०४), ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

लाल पत्थर के पट्ट पर किसी पुरुष का खण्डित धड़ भाग मात्र ।

४९. पट्ट, (३८०५), ४ $\frac{१}{२}$ से० मी०, सिरपुर उत्खनन ।

लाल पत्थर का; तीन आकृतियां जो अस्पष्ट हैं ।

डाहलमण्डलीय कलचुरिकालीन प्रतिमाएं

(दसवीं ग्यारहवीं शती ईस्वी)

बौद्ध

१. भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध, (०१०६), १८ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक पांच-ख)

बुद्ध एक पर एक रखे कमल पर भूमिस्पर्श मुद्रा में बैठे हैं। उनका बायां हाथ गोद में रखा है और दाहिना हाथ नीचे लटक कर भूमिस्पर्श करने की अभिव्यक्ति करता है। प्रतिमा का छाती से ऊपर का भाग खण्डित है।

चौकी के मध्य में एक स्त्री सम्मुख बैठी है। उसके दोनों ओर एक एक सिंह और धुर छोर पर एक एक भक्त स्त्री है। चौकी की निचली पट्टी पर बौद्धमन्त्र उत्कीर्ण है जो इस प्रकार है :—

"ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत्तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः।"

जैन

२. ऋषभनाथ, (२५३७), १३५ से० मी, कारीतलाई। (चित्रफलक छह-क)

प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभनाथ, जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है, ऊंची चौकी पर पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनका मस्तक, दाहना हाथ और बायां घुटना खंडित है। तीर्थंकर की छाती पर श्रीवृक्ष का प्रतीक है और मस्तक के पीछे प्रभामण्डल। प्रभामण्डल के ठीक ऊपर तिहरा छत्र है जिसके दोनों ओर एक एक महावत युक्त हाथी खड़ा है। छत्र के ऊपर दुंदुभिक और हाथियों के नीचे विद्याधरों का जोड़ा है जो आकाश से पुष्पवृष्टि कर रहा है। विद्याधरों के नीचे एक ओर सौधर्मेन्द्र और दूसरी ओर ईशानेन्द्र अपने हाथ में चंवरी लिये ऋषभनाथ के परिचारक के रूप में खड़े हैं।

प्रतिमा की चौकी अलंकृत है। उस पर पड़ी झूल पर ऋषभनाथ का लांछन वृषभ है। वृषभ के नीचे चौकी के ठीक मध्य में धर्मचक्र बना है जिसके दोनों ओर एक एक सिंह है। सिंहासन के दाहने छोर पर ऋषभनाथ का शासनदेव गोमुख और बायें छोर पर उनकी शासनदेवी चक्रेश्वरी की ललितासन में बैठी प्रतिमाएं हैं।

३. ऋषभनाथ, (२५७६), १३२ से० मी०, कारीतलाई।

यह प्रतिमा ऊपर वर्णित ऋषभनाथ प्रतिमा के समान हैं किन्तु उसकी भांति इसका मस्तक खण्डित नहीं है, केवल दोनों हाथ और घुटने खण्डित हैं। तीर्थंकर ध्यानस्थ बैठे हैं और उनकी दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर स्थिर है। उनके केश घुंघराले हैं। अष्टप्रातिहार्य-युक्त इस प्रतिमा के सिंहासन के एक छोर पर शासनदेव गोमुख तथा दूसरे छोर पर शासनदेवी चक्रेश्वरी है जो अपने वाहन गरुड़ पर आसीन है।

४. ऋषभनाथ, (००३३), ७४ से० मी०, कारीतलाई।

सफेद बलुआ पत्थर की बनी इस प्रतिमा में ऋषभनाथ पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनका मस्तक और दोनों घुटने खण्डित हैं। छाती पर श्रीवृक्ष प्रतीक है और तीर्थंकर के दायें बायें परिचारक के रूप में क्रमशः सौधर्मेन्द्र और ईशानेन्द्र खड़े हैं जिनके ऊपरी भाग खण्डित हो गये है।

चौकी के ऊपरी भाग पर दायें छोर पर यक्ष गोमुख और बायें छोर पर यक्षी अम्बिका की बैठी हुई छोटी छोटी प्रतिमाएं हैं। यद्यपि अम्बिका बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ की शासनदेवी हैं फिर भी मध्यकाल में उसकी प्रतिमा प्रायः सभी तीर्थंकरों के साथ बनाई जाने लगी थी। चौकी पर जो अलंकृत झूल पड़ी है उसपर ऋषभनाथ का लांछन वृषभ बनाया गया है। वृषभ के ठीक नीचे धर्मचक्र और उसके दोनों ओर एक एक सिंह है जिनकी पीठ आपस में सटी हुई है। दोनों सिंहों के निकट एक एक पुजारी है।

५. ऋषभनाथ, (२५९४), ६८.५ से० मी०, कारीतलाई।

यह प्रतिमा भी सफेद बलुआ पत्थर की बनी है। इसमें भी ऋषभनाथ पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनका गले से ऊपर का भाग खण्डित है किन्तु कंधों पर केशगुच्छ लटक रहे हैं। मूलनायक प्रतिमा के दायें बायें अन्य तीर्थंकरों की छोटी छोटी प्रतिमाएं हैं। दायें ओर की तीर्थंकर प्रतिमाएं पद्मासन में हैं और बायें ओर की कायोत्सर्ग या खड्गासन में। चौकी की झूल पर वृषभ लांछन है। उसके नीचे धर्मचक्र और उसके दोनों ओर एक एक सिंह है। सिंहासन के दाहने कोने पर गोमुख तथा बायें कोने पर चक्रेश्वरी की प्रतिमाएं हैं।

६. ऋषभनाथ, (२५४८), ११२ से० मी०, कारीतलाई।

तीर्थंकर ऋषभनाथ पूर्ववत् पद्मासन में बैठे हैं। प्रभामण्डल, दुंदुभिक परिचारक इन्द्र, लांछन और यक्ष-यक्षी आदि भी पूर्ववत् हैं किन्तु तीर्थंकर का मुख खण्डित हो गया है। विशिष्टता यह है कि इसके सिंहासन पर सिंहों के जोड़े के साथ हाथियों का भी एक जोड़ा बनाया गया है जो अन्य प्रतिमाओं पर नहीं पाया गया।

७. ऋषभनाथ, (२५२५), १०२ से० मी०, कारी तलाई।

सफेद बलुवा पत्थर की बनी यह प्रतिमा खंडित होने के साथ ही प्रकृति के दुष्प्रभाव से गलकर भद्दी हो गई है। इसमें पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे ऋषभनाथ की छाती पर श्रीवृक्ष प्रतीक तथा कंधों तक लटकते केशगुच्छ हैं। सिंहासन की चौकी पर उनका लांछन वृषभ दिखलाई पड़ता है।

८. ऋषभनाथ और अजितनाथ, (२५८९), १०७ से० मी०, कारीतलाई।

सफेद बलुवा पत्थर की बनी इस द्विमूर्तिका प्रतिमा में प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ और द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। दोनों के मुख तथा हाथ खण्डित हैं। दोनों तीर्थंकर की छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न बना है। दोनों के मस्तक के पीछे अलग अलग प्रभामण्डल, मस्तक के ऊपर छत्रत्रय, दुंदुभिक, हाथी और पुष्पवृष्टि करते विद्याधर हैं। दोनों तीर्थंकरों के परिचारक इन्द्र और पुजारी जन अलग अलग हैं। चौकियों पर सिंहों के जोड़े हैं। ऋषभनाथ की चौकी पर उनका लांछन बैल, यक्ष गोमुख और यक्षी चक्रेश्वरी हैं, किन्तु अजितनाथ की चौकी पर उनका लांछन हाथी तथा महायक्ष और रोहणी नामक उनके यक्ष यक्षी हैं। चौकी के नीचे एक पंक्ति का छोटा सा लेख उत्कीर्ण है जो बहुत खण्डित है।

९. अजितनाथ और संभवनाथ, (२५५७), १३८ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक छह-ख)

लाल बलुवा पत्थर की बनी इस विशाल द्विमूर्तिका प्रतिमा में द्वितीय जैन तीर्थंकर अजितनाथ और तृतीय तीर्थंकर संभवनाथ की कायोत्सर्ग आसन में स्थित प्रतिमाएं हैं। इस उच्चकोटि की कलाकृति को उपद्रवियों ने निष्प्रयोजन हानि पहुंचाकर तीर्थंकरों के मस्तक और हाथ खंडित कर डाले हैं, किन्तु तीर्थंकरों के पीछे स्थित भव्य प्रभामण्डल, मस्तक के ऊपर के छत्रत्रय (एक), दुंदुभिक, हाथियों के जोड़े और पुष्पमालाएं लिये विद्याधरों के जोड़े सुरक्षित हैं। तीर्थंकरों के अलग अलग परिचारक के रूप में सौधर्म और ईशान स्वर्ग के इन्द्र चंवरी लिये खड़े है। तीर्थंकरों के चरणों के पास भक्तजन बैठे उनकी पूजा कर रहे हैं।

दोनों तीर्थंकर अलग अलग पादपीठ पर खड़े हैं। अजितनाथ के पादपीठ पर हाथी और संभवनाथ के पादपीठ पर वानर स्थित है। इन लांछनों से ही तीर्थंकरों की पहचान होती है। उसी प्रकार अजितनाथ की प्रतिमा के साथ उनके महायक्ष और रोहणी नामक यक्ष-यक्षी तथा संभवनाथ की प्रतिमा के साथ उनके यक्ष-यक्षी, त्रिमुख और प्रज्ञप्ति हैं। चौकी पर सिंहों के जोड़े और धर्मचक्र भी हैं।

१०. पुष्पदन्त और शीतलनाथ, (२५५६), १०७ से० मी०, कारीतलाई । (चित्रफलक सात-क)

यह द्विमूर्तिका प्रतिमा सफेद बलुवा पत्थर की बनी है। इसमें नवम जैन तीर्थंकर पुष्पदन्त और दशम जैन तीर्थंकर शीतलनाथ कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। पुष्पदन्त का दायां और शीतलनाथ का बायां हाथ खण्डित हो गया है। अन्य विवरण ऊपर वर्णित क्रमांक ८ के समान हैं। चौकियों पर इन तीर्थंकरों के चिह्न क्रमशः मकर और श्रीवृक्ष बने हुये हैं और उसी प्रकार यक्ष यक्षी भी भिन्न भिन्न हैं। पुष्पदन्त का यक्ष अभिजित और यक्षी महाकाली है जबकि शीतलनाथ के यक्ष का नाम ब्रह्म और यक्षी का नाम मानवी है।

११. धर्मनाथ और शान्तिनाथ, (२५३१), १०७ से० मी०, कारीतलाई ।

यह द्विमूर्तिका प्रतिमा ऊपर वर्णित प्रतिमा के समान है। धर्मनाथ की चौकी पर उनका लांछन वज्र बना है किन्तु शान्तिनाथ की चौकी खण्डित हो गई है जिसपर उनका चिह्न हरिण बनाया गया था। धर्मनाथ के यक्ष-यक्षी क्रमशः किन्नर और मानसी है तथा शान्तिनाथ के गरुड़ और महामानसी।

१२. शान्तिनाथ, (२५८८), १०७ से० मी०, कारीतलाई ।

सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ कायोत्सर्ग आसन में खड़े हैं। उनका मस्तक खंडित हो गया है किन्तु उनकी छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न, मस्तक के पीछे प्रभामण्डल, मस्तक के ऊपर त्रिछत्र और पुष्पमालाएं लिये विद्याधर तथा तीर्थंकर के दायें-बायें परिचारक इन्द्र आदि स्पष्ट हैं और पूर्व वर्णित प्रतिमाओं की ही भांति हैं। शांतिनाथ के पादपीठ पर दो सिंहों के बीच हरिण बना है जो इन तीर्थंकर का लांछन है। इनका यक्ष गरुड़ और यक्षी महामानसी चौकी पर स्थित हैं।

१३. मल्लिनाथ और मुनिसुव्रतनाथ, (००३७), १०९ से० मी०, कारीतलाई ।

बलुवा पत्थर की बनी इस द्विमूर्तिका प्रतिमा में उन्नीसवें जैन तीर्थंकर मल्लिनाथ और बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। दोनों की छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न है। उनके केश घुंघराले और कान की लौंड़ी लम्बी है। दोनों के परिचारक आदि, अलग अलग हैं। मल्लिनाथ का दायां और मुनिसुव्रतनाथ का बायां हाथ खण्डित हो गया है।

अलग अलग चरण चौकियों पर लटकती झूल पर कलश और कच्छप चिह्न दिखाई पड़ते हैं जो क्रमशः मल्लिनाथ और मुनिसुव्रतनाथ के लांछन हैं। मल्लिनाथ की चौकी पर उनका यक्ष कुबेर ओर यक्षी अपराजिता तथा मुनिसुव्रतनाथ की चौकी पर उनके यक्ष-यक्षी क्रमशः

वरुण और बहुरूपिनी लीलासन में बैठे हुये हैं। चौकी की निचली पट्टी पर एक पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है जो खण्डित है।

१४. पार्श्वनाथ, (००३५), १०४ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक सात-ख)

इस चतुर्विंशतिपट्ट में मूलनायक प्रतिमा तेईसवें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है। वे पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनके नेत्र अर्धनिमीलित हैं और दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर स्थिर है। पार्श्वनाथ की ठुड्डी नुकीली, कान लम्बे, केश घुंघराले और उष्णीषबद्ध हैं। उनकी छाती पर श्रीवृक्ष का प्रतीक है। पार्श्वनाथ को सर्प पर विराजमान दिखाया गया है जिसकी दुम तो नीचे लटक रही है और फैले हुये सातों फन का छत्र तीर्थंकर के मस्तक के ऊपर तना हुआ है। सप्तफण के छत्र के ऊपर कल्पद्रुम के लटकते हुये पत्ते और उनके ऊपर दुन्दुभिक है। फण के दोनों ओर एक एक हाथी है जिसपर बैठे महावत के तन का ऊपरी भाग खण्डित है। हाथियों के नीचे दोनों ओर एक एक विद्याधर है जो हाथ में पुष्पमाला लिये हैं।

तीर्थंकर के दायें ओर सौधर्मेन्द्र और बायें ओर ईशानेन्द्र चंवरी लिये खड़े हैं। पार्श्वनाथ के तीन ओर की पट्टियों पर अन्य तीर्थंकरों की छोटी छोटी प्रतिमाएं बनी हुई हैं। दाहने ओर की पट्टी पर ९ और बायें ओर की पट्टी पर ८ प्रतिमाएं हैं। शेष ६ तीर्थंकरों की प्रतिमाएं ऊपर की आड़ी पट्टी पर बनी हुई थीं जो भाग अब खंडित हो गया है। इस प्रकार मूलनायक पार्श्वनाथ को मिलाकर इस प्रतिमा में कुल चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएं होने के कारण इसे चौबीसी प्रतिमा या चतुर्विंशतिपट्ट कहा जाता है। प्रतिमा की चौकी पर दो सिंहों के बीच धर्मचक्र स्थित है। सिंहों के पास क्रमशः धरणेन्द्र और पद्मावती (तीर्थंकर के यक्ष यक्षी) बैठे हैं। उनके मस्तक पर फण है।

१५. पार्श्वनाथ, (२५७७), १३७ से० मी०, कारीतलाई।

यह प्रतिमा भी चतुर्विंशतिपट्ट जान पड़ती है क्योंकि ऊपर वर्णित प्रतिमा के समान इसमें भी छोटी छोटी अनेक तीर्थंकर प्रतिमाएं बनाई गई हैं। मूलनायक प्रतिमा पार्श्वनाथ की है जो ऊंचे सिहासन पर पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। पार्श्वनाथ के यक्ष और यक्षी, क्रमशः धरणेन्द्र और पद्मावती, चौकी पर बैठे है किन्तु उनका तन खण्डित है।

१६. पार्श्वनाथ, (२५५३), १०९ से० मी०, कारीतलाई।

प्रायः ऊपर वर्णित दो प्रतिमाओं जैसी है। शीर्षभाग खंडित है।

१७. पार्श्वनाथ का मस्तक, (२५५१), ३५.५ से० मी०, कारीतलाई।

किसी विशाल पार्श्वनाथ प्रतिमा का मस्तक जिसके ऊपर सर्प के सात फनों का छत्र तना है।

१८. महावीर, (००३६), १०१.५ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक आठ-क)

इस प्रतिमा में चौबीसवें और अन्तिम जैन तीर्थंकर महावीरस्वामी ऊंचे सिंहासन पर उत्थित पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनके केश घुंघराले तथा उष्णीषबद्ध हैं और उनकी छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न है। प्रतिमा का प्रभामण्डलयुक्त ऊपरी भाग और उसी प्रकार बायें ओर का भाग खण्डित है किन्तु उससे मूलप्रतिमा को कोई क्षति नहीं पहुंची है। तीर्थंकर के दायें ओर की पट्टी पर उनके परिचारक सौधर्मेन्द्र खड़े हैं तथा अन्य तीर्थंकरों की चार पद्मासनस्थित प्रतिमाएं शेष रही हैं।

ऊंची चौकी पर बीचोंबीच धर्मचक्र है जिसके ऊपर महावीर का लांछन सिंह है। इन दोनों के दोनों ओर एक एक सिंह और है जो सिंहासन की अभिव्यक्ति करते हैं। धर्मचक्र के नीचे एक स्त्री लेटी हुई है जो चरणों में पड़े रहने का सकेत है।[1] महावीर का यक्ष मातंग हाथ जोड़े खड़ा है किन्तु यक्षी सिद्धायिका चंवरी लिये हुये है। इनके दोनों ओर पूजा करते भक्त दिखाई पड़ते हैं।

१९. सर्वतोभद्रिका, (२५५५), ६८.५ से० मी०, कारीतलाई।

इस शिखराकार शिल्प में चारों ओर एक एक तीर्थंकर पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हुये हैं। इस प्रकार की प्रतिमाओं को किसी भी तरफ से देखा जाय, तीर्थंकर के दर्शन हो जाते हैं जिससे मानव का कल्याण होता है। इसलिये चारों तरफ मूर्तियों वाली प्रतिमाओं को सर्वतोभद्रिका की संज्ञा दी गई है। प्रस्तुत सर्वतोभद्रिका के चार तीर्थंकरों में से केवल एक, पार्श्वनाथ, को ही निश्चयेन पहचाना जा सकना है क्योंकि उनके मस्तक पर सर्पफण है। किन्तु सर्वतोभद्रिका प्रतिमाओं में चार विशिष्ट तीर्थंकरों की ही प्रतिमाएं अधिकतर बनाई जाती रही हैं यथा, ऋषभनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीरस्वामी। अतएव इस सर्वतोभद्रिका की अन्य तीन प्रतिमाएं क्रमशः ऋषभनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की हो सकती हैं।

यह सर्वतोभद्रिका अपनी मूल अवस्था में बड़ी ही सुन्दर प्रतिमा थी किन्तु प्रकृति के दुष्प्रभाव से इसका पाषाण गल गया है और इसे क्षति पहुंची है।

२०. द्विमूर्तिका, (२६०५), २३ से० मी०, कारीतलाई।

किसी द्विमूर्तिका प्रतिमा का खंडित भाग जिसमें दो तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में खड़े हैं।

२१. द्विमूर्तिका, (२६१०), ४०.५ से० मी०, कारीतलाई।

उपरोक्त प्रकार खंडित

---

१. बुलेटिन आफ प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम, अंक ५ (१९५५-५७) पृष्ठ २४-३२

२२. त्रिमूर्तिका, (२५९५), पट्ट की चौड़ाई ६१ से० मी०, कारीतलाई।

तीन तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। निचला भाग खंडित हो जाने से चिन्हों के अभाव में तीर्थंकरों की पहचान नहीं होती।

२३. खड़े तीर्थंकर, (२५२३), १३७ × ७६ से० मी०, कारीतलाई।

तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। उनके केश घुंघराले और कान लम्बे हैं, छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न है। प्रतिमा अष्टप्रातिहार्ययुक्त है। तीर्थंकर के मस्तक के पीछे प्रभामण्डल, उसके ऊपर त्रिछत्र, दुंदुभिक और ऐरावत हाथी बने हैं। इनके दोनों ओर विद्याधरों के दो दो जोड़े पुष्पमालाएं लिये उड़ रहे हैं। विद्याधरों के तन पर विभिन्न आकर्षक आभूषण हैं। तीर्थंकर के दाहने ओर परिवारक रूप में सौधर्मेन्द्र और बाएं ओर ईशानेन्द्र खड़े हैं जो सर्वाभरणभूषित हैं। इन्द्रों के नीचे दोनों ओर चार स्त्रियां अर्घ्य समर्पित कर रही हैं।

लांछन के अभाव में तीर्थंकर पहचाने नहीं जाते। चरणचौकी नीची है। उसपर ग्रहों की छोटी छोटी प्रतिमाएं हैं जिनकी संख्या केवल आठ है क्योंकि जैन परंपरा में ग्रहों की संख्या केवल आठ मानी जाती रही है। प्रतिमाओं के साथ ग्रहों की नौ प्रतिमाएं बनाने की प्रथा बाद में चली।

२४. खड़े तीर्थंकर, (२५८०), १०१.५ से० मी०, कारीतलाई।

किसी स्तंभ का खण्ड है जिसपर कोई तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में खड़े हैं। उनके पैर खण्डित हो गये हैं तथा चौकी भी नहीं है। तीर्थंकर के मस्तक पर छत्रत्रय सुशोभित हैं। उसके ऊपर दुंदुभिक तथा हाथी आदि हैं। स्तंभ की एक ओर की पट्टी पर गजशार्दूल, मकर, आदि मांगलिक अलंकरण बने हैं।

२५. जिनप्रतिमा का मस्तक, (२६०९), १८ से० मी०, कारीतलाई।

खंडित तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तकमात्र।

२६. जिनप्रतिमा का मस्तक, (२६०४), २३ से० मी०, कारीतलाई।

पूर्ववत् खंडित प्रतिमा का मस्तक; केश घुंघराले।

२७. सहस्र जिनबिम्ब, (२५१९), ८९ × ४८ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक आठ-ख)

नीचे से ऊपर को सकरा होता हुआ यह स्तंभाकृति शिल्पखंड जैन ग्रथों में वर्णित सहस्रकूट जिन चैत्यालय का प्रतीक है। इसके चारों ओर छोटी छोटी बहुत सी जिनप्रतिमाएं बनाई गई हैं जो सभी पद्मासन में हैं और सहस्र प्रतिमाओं का संकेत करती हैं। प्रस्तुत शिल्पखंड में सात पंक्तियां हैं। प्रत्येक में बनी प्रतिमाओं की संख्या इस प्रकार है।

नीचे से पहली और दूसरी पंक्ति प्रत्येक ओर ७-७
तीसरी से पांचवी पंक्ति प्रत्येक ओर ६-६
छठी पंक्ति प्रत्येक ओर ५-५
सातवीं पंक्ति प्रत्येक ओर ३-३
सभी प्रतिमाओं के मस्तक के पीछे कमलाकृति प्रभामण्डल हैं।

२८. सहस्र जिनबिम्ब, (२५८७), ७६ से० मी०, कारीतलाई।

है तो उपरोक्त के ही समान पर प्रतिमाओं की पंक्तियां केवल ६ हैं। सबसे नीचे की पंक्ति की प्रतिमाओं के नीचे धर्मचक्र और उसके दोनों ओर एक एक सिंह है। प्रत्येक पंक्ति में बनी प्रतिमाओं की संख्या निम्न प्रकार है :--

नीचे से पहली और दूसरी पंक्ति प्रत्येक ओर ७-७
तीसरी से पांचवीं पंक्ति प्रत्येक ओर ६-६
छठी पंक्ति प्रत्येक ओर ४-४

२९. सहस्र जिनबिम्ब, (२५४१), ६८.५ से० मी०, कारीतलाई।

पूर्वोक्त के सदृश। धर्मचक्र और सिंहों के जोड़े भी। सभी प्रतिमाएं उत्थित पद्मासन में आसीन हैं और उनके पीछे प्रभामण्डल भी हैं। पंक्तियों में प्रतिमाओं की संख्या निम्न प्रकार है :--

नीचे से पहली ओर दूसरी पंक्ति प्रत्येक ओर ७-७
तीसरी पंक्ति प्रत्येक ओर ६-६
चौथी पंक्ति प्रत्येक ओर ५-५
पांचवीं पंक्ति प्रत्येक ओर ४-४

३०. सहस्र जिनबिम्ब, (२५४०), ६१ से० मी०, कारीतलाई।

इस शिल्पखंड का एक ओर का भाग किंचित् खंडित है। प्रतिमाओं की पंक्तियां निम्न प्रकार हैं :--

नीचे से पहली और दूसरी पंक्ति प्रत्येक ओर ९-९
तीसरी और चौथी पंक्ति प्रत्येक ओर ८-८
पांचवीं पंक्ति प्रत्येक ओर ७-७

३१. आम्रा देवी, (००९७), ४०.५ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक नौ-क)

सफेद छींटेंदार लाल बलुवा पत्थर की बनी इस प्रतिमा में बाईसवें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की शासनदेवी आम्रादेवी अपर नाम अम्बिका, ललितासन में सिंह के ऊपर बैठी है

जो उसका वाहन है। यक्षी के दो हाथ हैं। वह अपने दायें हाथ में आम्रलुम्बि लिये है और बायें हाथ से अपने कनिष्ठ बेटे प्रियंकर को सम्हाले हुये है जो उसकी गोद में बैठा है। अम्बिका का जेठा बेटा शुभंकर अपनी मां के दायें पैर के पास बैठा है।

प्रतिमा कलापूर्ण है। अम्बिका का मुस्कानभरा चेहरा आकर्षक और प्रभावपूर्ण है। मस्तक के ऊपर स्थित आम्रवृक्ष वाला भाग टूट गया है। अम्बिका का केशविन्यास मनोहर है। उसके सीमन्त में मोतियों की लड़ी पड़ी हुई है। देवी के कानों में, गले, में भुजाओं में, कलाइयों में, कटि में और पैरों में भी यथोचित आभूषण हैं। यक्षी के दोनों ओर एक एक परिचारिका खड़ी है। दाहने ओर की परिचारिका के बायें हाथ में कमल और दायें हाथ में चंवरी है। बायें ओर की परिचारिका अपने बायें हाथ से अधोवस्त्र पकड़े है और उसके दायें हाथ में संभवतः कमल है।

३२. खड़ी आम्रादेवी, (००३४), ९१.५ से० मी, कारीतलाई। (चित्रफलक नौ-ख)

इस प्रतिमा में अम्बिका या आम्रादेवी आम्रवृक्ष के नीचे एक सादी चौकी पर त्रिभंग-मुद्रा में खड़ी हुई है। उसके दो हाथ हैं। दाहने हाथ में आम्रलुम्बि है और बायें हाथ से कनिष्ठ पुत्र प्रियंकर को गोद में उठाये हुये हैं। जेठा बेटा शुभंकर यक्षी के दाहने पैर के निकट खड़ा है। शुभंकर और प्रियंकर दोनों के मस्तक खण्डित हो गये हैं। यक्षी के तन पर विविध आभूषण हैं।

आम्रवृक्ष पर बाईसवें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा है। वृक्ष के दोनों ओर खड़ी एक एक विद्याधरी पुष्पवृष्टि करती दिखाई गई है। अम्बिका की पूजा करने वाली एक स्त्री उसके दायें ओर है और पुजारी पुरुष बायें ओर हाथ जोड़े खड़ा है। स्त्री बहुत से आभूषण पहने है और पुरुष की हलकी सी दाढ़ी है।

यक्षी का वाहन सिंह उसके पैरों के पीछे बैठा है।

३३. अम्बिका और पद्मावती, (२५८१), ऊंचाई ४८ से० मी०, कारीतलाई।

किसी जैन मंदिर के द्वार की चौखट का खण्ड है। इसके दाहने ओर के आधे भाग में कोई तीर्थंकर पद्मासन में बैठे हैं। उनके दोनों ओर एक एक तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। धुर छोर पर मकर और पुरुष हैं।

बायें ओर के आधे भाग में ऊपर तो एक विद्याधर है और नीचे आले में अम्बिका और पद्मावती एक साथ ललितासन में बैठी हैं। ये दोनों देवियां क्रमशः नेमिनाथ और पार्श्वनाथ की यक्षी हैं। अम्बिका की गोद में बालक है और पद्मावती के मस्तक पर सर्प का फण है।

३४. सरस्वती, (२५२४), ७९ से० मी०, कारीतलाई।

जैन परंपरा में सरस्वती को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह तीर्थंकर की वाणी का मूर्तरूप है। वाग्देवियों के रूप में सरस्वती के अनेक भेद हैं। प्रस्तुत सरस्वती प्रतिमा कारीतलाई के जैन मंदिरों के खण्डहरों में प्राप्त हुई है अतएव इसे जैन प्रतिमाओं में सम्मिलित किया गया है।

प्रतिमा अत्यन्त खण्डित है। देवी का मस्तक और हाथ भी खण्डित है पर प्रभामण्डल पूर्णतः स्पष्ट है। देवी ललित आसन में बैठी है और उसके तन पर विभिन्न आभूषण हैं। सरस्वती के चार हाथ हैं जिनमें दाहिने निचले और बायें उपरले हाथों से उसने वीणा पकड़ रखी है।

वाहन अस्पष्ट है। नीचे एक भक्त देवी की पूजा कर रहा है और प्रतिमा के ऊपरी छोरों पर विद्याधरजन पुष्पमालाएं लिये उड़ रहे हैं।

शैव

३५. खड़े शिव, (२५२६), ७६ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक दस-क)

चतुर्भुज शिव सम्मुख खड़े हैं। उनके मस्तक पर जटामुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार और यज्ञोपवीत तथा हाथों में कड़े हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें से दायां उपरला खण्डित है। दायां निचला हाथ वरदमुद्रा में स्थित है और बायें उपरले तथा निचले हाथों में क्रमशः सर्प और कमण्डलु है। शिव का वाहन नन्दी उनके चरणों के पास बैठा है। चौकी की निचली पट्टी पर कारीगर द्वारा बना दिये गये अटपटे निशान हैं।

३६. शिव, (२५४७), ५६ से० मी०, कारीतलाई।

इस प्रतिमा में शिव सम्मुख खड़े हैं। उनके चारों हाथ खण्डित हो गये हैं। मस्तक पर का जटामुकुट भी खंडित है। बायें पैर के पास नन्दी बैठा है।

३७. शिव, (२५२९), ५३.५ से० मी०, कारीतलाई।

किसी मंदिरवास्तु का खंड। दो ओर शिव की दो अलग अलग प्रतिमाएं। दोनों में वे सम्मुख खड़े हैं। दोनों में ही शिव के मस्तक पर जटामुकुट और उनके पैर के पास बैठा नन्दी। शिव के सभी हाथ खंडित हैं अतएव आयुध अस्पष्ट किन्तु निचला हाथ कमर पर रखा हुआ और बायें निचले हाथ में कलश या बिजौरा दिखाई पड़ता है।

३८. खंडित शिवप्रतिमा, (२६११), ३५.५ से० मी०, कारीतलाई।

छाती के ऊपर का खंडित भाग है।

३९. शिव का मस्तक, (२६१४), २५.५ से० मी०, कारीतलाई।

खंडित शिव प्रतिमा का मस्तक जो जटाजूटयुक्त है।

४०. शिव का मस्तक, (०१००), ११.५ से० मी०, कारीतलाई।

जटामुकुट और भाल पर तृतीय नेत्र।

४१. भैरव, (००२२), ४८ से० मी०, त्रिलहरी। (चित्रफलक दस–ख)

लम्बोदर भैरव त्रिभंगमुद्रा में खड़े हैं। उनके मस्तक के पीछे सादा प्रभामंडल है। वे कानों में कुंडल तथा गले में संभवतः कपालमाला और यज्ञोपवीत पहने हैं। उनके चार हाथ हैं, दायें उपरले और निचले हाथों में क्रमशः डमरू और खप्पर हैं और बायें उपरले-निचले हाथों में उसी प्रकार घंटा और शूल। भैरव का वाहन कुत्ता उनके दाहने पैर के पास खड़ा है।

४२. भैरव, (००२३), २९ से० मी०, त्रिलहरी।

शिखराकृति शीर्षवाले एक आले में भैरव ललितासन में बैठे हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें से निचला बायां हाथ खंडित हो गया है। दाहने निचले हाथ में कपाल और दाहने उपरले हाथ में त्रिशूल है। उपरले दायें हाथ में उन्होंने खड्ग ले रखा है। वाहन दायें पैर के नीचे बैठा है जो अस्पष्ट है।

४३. उमामहेश्वर, (२५२४), ९१.५ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक ग्यारह-क)

लाल बलुवा पत्थर की बनी इस शिवपार्वती प्रतिमा में शिव ललित आसन में बैठे हुये हैं; उनकी बायीं जांघ पर पार्वती उसी प्रकार बैठी हैं। दोनों नाना प्रकार के आभूषण पहने हैं। शिव चतुर्भुज हैं किन्तु पार्वती के दो हाथ हैं। शिव के उपरले दायें बायें हाथों में क्रमशः त्रिशूल और सर्प हैं; दाहिने निचले हाथ में अक्षमाला है और बायां निचला हाथ पार्वती के स्तन का स्पर्श कर रहा है। पार्वती का दायां हाथ शिव के गले में पड़ा है और बायां अपने घुटने पर रखा है।

दोनों कैलाश पर्वत पर बैठे हुये हैं। प्रतिमा के ऊपर के भाग में दायें ओर चतुर्भुज ब्रह्मा और बांयें ओर चतुर्भुज विष्णु बैठे हैं। उमामहेश्वर के दोनों ओर एक एक गण बैठा है।

उन के नीचे एक ओर गणेश और दूसरी ओर कार्तिकेय हैं जिन के बीच में नन्दी और कैलाश को उठाने की चेष्टा करते हुआ रावण है।

४४. पार्वती, (२५३२), ७७ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक ग्यारह-ख)

इस प्रतिमा में पार्वती सम्मुख खड़ी हैं। वे हार, मोतीमाला, नूपुर आदि आभूषण धारण किये हुये हैं। उनके सीमंत में एक मणि खुंसा है और केश लहरा रहे हैं। पार्वती की कटि में बारीक धोती बंधी है। पार्वती के दो हाथ हैं; बायें हाथ में कमंडलु है और दायां हाथ नीचे लटका हुआ है। चौकी के नीचे कारीगर द्वारा बनाये गये अटपटे चिह्न हैं।

४५. पंचाग्नि तप करती पार्वती, (२५३५), ५८ से० मी०, कारीतलाई।

शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिये पार्वती ने कठोर तपश्चर्या की थी, यह प्रतिमा उनकी उसी अवस्था की है। यद्यपि इसे कटनी के श्री दुर्गाप्रसाद खरे ने संग्रहालय को भेंट किया था किन्तु उन के ही कथनानुसार इसका प्राप्तिस्थान कारीतलाई है।

पार्वती सम्मुख बैठी पंचाग्नि तप कर रहीं हैं। उनके केश जटाओं जैसे बंधे हुये हैं किन्तु कान, गले और हाथों में आभूषण हैं। पार्वती के चार हाथों में से नीचे के दो हाथ गोद में अंजलिबद्ध हैं किन्तु ऊपर के दोनों हाथ खंडित हैं।

प्रतिमा के पट्ट के दाहिने छोर पर अग्निकुंड ? का चिह्न है। ऐसे ही तीन अन्य अग्निकुंड प्रतिमा के अन्य कोनों पर बनाये गये थे जो अब खंडित हो गये हैं। यह भी संभव है कि देवी के ऊपर के दोनों हाथों में चक्र रहे हों। तब यह चक्रेश्वरी की प्रतिमा हो सकती है।

४६. लक्ष्मी, (२५२८), ४३ से० मी०, कारीतलाई।

लक्ष्मी की यह ललितासन में बैठी प्रतिमा विष्णु पत्नी लक्ष्मी की नहीं बल्कि गौरी के एक विशिष्ट रूप की है। गौरी जटामुकुट धारण किये हैं और उनके गले में हार तथा स्तनों तक लटकती मुक्तामाला है। उनके चार हाथ हैं। ऊपर के दोनों हाथों में कमल हैं और निचले दायें बायें हाथों में क्रमशः अक्षसूत्र और कलश।

४७. गणेश, (२५७२), ५३.५ से० मी०, कारीतलाई।

गणेश पैर से पैर सटाये बैठे हैं। उनके बड़े पेट पर सर्प का यज्ञोपवीत लटक रहा है। सिर पर मुकुट है और गले में हार। सूंड का हिस्सा खंडित हो गया है किन्तु सूप जैसे उन के कान बड़े विशाल हैं। गणेश चतुर्भुज हैं किन्तु बायें ओर के दोनों हाथ तथा दायें ओर का निचला हाथ खंडित हो गया है। ऊपर के दाहने हाथ में मोदक भरे हैं।

वैष्णव

४८. नारायणमूर्ति, (२५८५), ६६ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक बारह–क)

विष्ण ललितमुद्रा में सम्मुख खड़े हैं। उनके चार हाथ हैं। उनके दायें निचले और उपरले हाथों के आयुध क्रमशः शंख और पद्म है; बायां ऊपर का हाथ खंडित हो गया है जिसमें गदा थी। उसी प्रकार बायें निचले हाथ का आयुध भी खंडित है पर हाथ की पकड़ से ऐसा अनुमान किया जाता है कि वह चक्र था। विभिन्न हाथों में आयुधों की इस प्रकार योजना से यह प्रतिमा विष्णु की नारायगमूर्ति कही जा सकती है। नारायण धोती पहने हैं; उनके मस्तक पर किरीटमुकुट, कानों में कुंडल, गले में हार और यज्ञोपवीत तथा हाथों में कंकण हैं। लंबी वैजयन्ती माला विष्णु के घुटनों तक लटक रही है। चरण खंडित हो गये हैं।

४९. गोविन्दमूर्ति, (२५३८); ८९ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक बारह–ख)

विष्णु सामने खड़े हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें से बायें ओर के निचले हाथ के सिवाय सभी खंडित हो गये हैं। उस में शंख है। अन्य हाथों में धारण किये हुये आयुधों के जो चिह्न बचे हैं उनके अनुसार अनुमान किया जाता है कि विष्णु के दाहिने निचले हाथ में चक्र, दाहने उपरले हाथ में गदा और बायें उपरले हाथ में पद्म, इस प्रकार आयुधों की योजना की गई थी। तदनुसार यह प्रतिमा विष्णु की गोविन्दमूर्ति है। प्रतिमा की बनावट परिष्कृत एवं कलापूर्ण है। गोविन्द अनेक आभूषण धारण किये हैं; उनके मस्तक पर किरीटमुकुट, माथे पर तिलक और कानों में कुंडल हैं। गले में धारण की हुई चारलड़ की मुक्ता माला में मध्यमणि जड़ा हुआ है। यज्ञोपवीत की ब्रह्मगांठ में भी रत्न जड़ा है। वैजयन्ती माला घुटने तक लटक रही है।

५०. मधुसूदन, (२५४६); ७९ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक बारह-ग)

यह प्रतिमा विष्णु की मधुसूदनमूर्ति है। विष्णु चतुर्भुज हैं किन्तु उनका दायां उपरला हाथ खंडित हो गया है जिसमें शंख था। अन्य तीन हाथों के आयुध स्पष्ट हैं यथा, दायें निचले हाथ में चक्र, बायें उपरले हाथ में पद्म और बायें निचले हाथ में गदा।

५१. त्रिविक्रम, (००९८), २७से० मी०, कारीतलाई।

त्रिविक्रम की यह प्रतिमा कटि से नीचे खंडित है। इसमें त्रिविक्रम का बायां पैर ऊर्ध्व उठा हुआ है किन्तु वह भी घुटने से नीचे खंडित हो गया है। त्रिविक्रम की छाती पर श्रीवत्स चिन्ह है और वे यज्ञोपवीत धारण किये हुये हैं। उन के तन पर किरीटमुकुट, कुंडल,

हार, केयूर और कटक तथा मेखला आदि आभूषण सुशोभित हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें से दायां उपरला हाथ खण्डित हो गया है। उसमें वे गदा धारण किये थे। अन्य तीन हाथों में शेष आयुधों की योजना इस प्रकार है यथा, निचले दाहने हाथ में पद्म, बायें उपरले हाथ में चक्र और बायें निचले हाथ में शंख।

५२. त्रिविक्रम, (२५२६), ५३.५ से०मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक चौदह-क)

विष्णु की त्रिविक्रम मूर्ति। आयुधों का क्रम पद्म, गदा, चक्र, और शंख, इस प्रकार है। इसका मुकुट किरीट मकुट की अपेक्षा ऊंची टोपी के अधिक सदृश है। बनावट अपरिष्कृत।

५३. वामन, (२५६३), ४३ से मी०, कारीतलाई।

ठिगने कद की वामनमूर्ति, सिर पर शिखा। मस्तक और हाथ खण्डित किन्तु आभूषण और वैजयन्तीमाला सुस्पष्ट।

५४. वामन?, (२५३८), ६१ से०मी०, कारीतलाई।

सभी हाथों के खण्डित हो जाने से आयुधों के क्रम का ज्ञान नहीं होता। वामन प्रतिमा हो सकती है। चरणों के पास दोनों ओर एक एक भक्त बैठा है।

५५. हृषीकेश, (२५६५), ६१ से० मी०, कारीतलाई।

विष्णु ललितमुद्रा में सम्मुख खड़े हैं। उनके दोनों पैर और दायां उपरला हाथ खण्डित हैं। उनके मस्तक पर किरीटमुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार और हाथों में कंकण आदि आभूषण हैं। गले में पड़ी हुई वैजयन्ती माला उनके घुटनों तक झूल रही है। विष्णु के चार हाथ ह। वे बायें उपरले हाथ में पद्म और बायें निचले हाथ में शंख धारण किये हैं। दायें निचले हाथ में गदा और दायें उपरले हाथ में चक्र था। इन आयुधों के अब केवल चिह्न मात्र ही शेष रहे हैं।

५६. नृसिंह, (२५६४), ५१ से० मी०, कारीतलाई।

इस खण्डित प्रतिमा में नृसिंह हिरण्यकशिपु को अपनी जांघ पर लिटाकर अपने तीखे और नुकीले नाखूनों से उसका पेट चीर रहे हैं। नृसिंह का मुख खण्डित हो गया है किन्तु वे अपने गले और हाथों में अनेक आभूषण धारण किये हुये हैं। प्रतिमा के ऊपरी भाग में पुष्पमालाएं लिये गंधर्व हैं और नीचे के भाग में प्रह्लाद तथा अन्य भक्त हाथ जोड़े बैठे हैं।

५७. नृसिंह, (२५२० और २५९२), १२७ से० मी० + ६९ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक तेरह-ख)

नृसिंह की यह विशाल प्रतिमा अपने मूल रूप में मनुष्य की पूरी ऊंचाई से लगभग डेढ़

गुनी ऊंची थी। किन्तु दुर्भाग्य से यह प्रतिमा तीन हिस्सों में खंडित हो गई जिन में से ऊपर और नीचे के दो हिस्से ही प्राप्त हो सके हैं, मध्य का हिस्सा बहुत खोजने पर भी दिखाई नहीं पड़ा।

पहले हिस्से में नृसिंह का मस्तक से लेकर जांघ तक का भाग है और दूसरे हिस्से में उनका एक पैर जो ऊंची चौकी पर स्थिर है। इस खंडित प्रतिमा को कलचुरि काल की सर्वोत्तम प्रतिमाओं की श्रेणी में रखा जा सकता है। नृसिंह का विशाल और रोबीला मुख, बड़ी बड़ी भौंहें, विकराल और विस्फारित नेत्र, पीठ पर लहराती अयाल, सभी कुछ बड़े स्वाभाविक तथा प्रभावक हैं। प्रतिमा के दोनों हाथ खंडित हैं पर गले में पड़े रत्नजटित हार और कलापूर्ण यज्ञोपवीत सुन्दर हैं।

चौकी पर नृसिंह के एक पैर का पंजा रखा हुआ है जिसके नाखून बड़ी बारीकी से बनाये गये हैं। पंजे में सजा नूपुर सुन्दर है। चौकी पर सामने नृसिंह की शक्ति नारसिंही की द्वादशभुजी प्रतिमा है। उसके दोनों ओर एक एक सिंह हैं। चौकी के दूसरे ओर पूजा करते भक्तजन हैं।

५८. अच्युत, (००३१), ७६ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक तेरह-क)

विष्णु कमल पर ललित आसन में बैठे हैं। उनके मस्तक के पीछे सादा कमलाकृति प्रभामण्डल है जिसके दोनों ओर एक एक गंधर्व पुष्पमाला लिये उड़ रहे हैं। विष्णु की छाती पर श्रीवत्स चिह्न है। मस्तक पर किरीटमुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार, तीन लड़ की माला, यज्ञोपवीत तथा वैजयन्ती माला, भुजाओं में बाजूबंद, कलाइयों में कटक और कटि में तीन लड़ की मेखला पहने हैं जिसकी गांठ में रत्न जड़ा है। विष्णु के चार हाथों में से दाहिने तरफ के दोनों हाथ खंडित हैं। उनके बायें उपरले हाथ में चक्र और बायें निचले हाथ में शंख है। विष्णु की ललितासन की स्वतंत्र प्रतिमाएं कम ही मिलती हैं, इसलिये यह महत्वपूर्ण है। प्रतिमा मनोहर और सुन्दर तो है ही, इसके चेहरे पर शान्ति और गंभीरता के भाव हैं।

५९. उपेन्द्र, (२५७१), ५८.५ से० मी०, कारीतलाई।

विष्णु चौकी पर सम्मुख खड़े हैं। उनके मस्तक पर किरीट मुकुट तथा शरीर पर अन्य आभूषण हैं। मस्तक के पीछे सुन्दर प्रभामंडल है और वैजयन्ती माला घुटनों तक झूल रही है।

विष्णु के चार हाथ हैं जिनमें से दायें उपरले हाथ के सिवाय सभी खण्डित हैं। आयुधों के खण्डित हो जाने पर भी उनके बचे हुये चिन्हों से इस प्रतिमा के आयुधों की योजना का अनुमान इस प्रकार लगाया जाता है। दाहने उपरले हाथ में गदा थी और बायें उपरले में चक्र। नीचे के दाहने हाथ में संभवतः शंख था और बायें हाथ में पद्म। इस प्रकार की आयुध योजना से इसका उपेन्द्रमूर्ति होना संभावित है किन्तु पद्म के निचले दाहिने हाथ में और शंख के निचले बायें हाथ में होने की स्थिति में यह त्रिविक्रम की अभिव्यक्ति करती है।

विष्णु के चरणों के निकट दोनों ओर एक-एक भक्त स्त्री बैठी हैं जो नमन कर रही है।

६०. विष्णु का मस्तक, (०१०१), २४ से० मी०, कारीतलाई।

किरीट मुकुट युक्त

६१. गरुडनारायण, (२५४२), ७४ से० मी०, कारीतलाई।

गरुड़ पर बैठे विष्णु के चार हाथ हैं जो सभी खण्डित हैं। विष्णु के मस्तक पर किरीट-मुकुट, कानों में कुण्डल तथा गले में हार और यज्ञोपवीत आदि हैं। गरुड़ की आकृति मनुष्य जैसी है। वह भी अपने तन पर आभूषण धारण किये है।

६२. गरुडनारायण, (२५८४), ७१ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक चौदह-ख)

ऊपर वर्णित प्रतिमा के समान है किन्तु दुहरी प्रतिमाएं हैं।

६३. योगनारायण, (२५२७), ४८ से० मी०, कारीतलाई।

ध्यानी विष्णु की प्रतिमा; मस्तक खण्डित किन्तु उसके पीछे का प्रभामण्डल स्पष्ट। गले में ग्रैवेयक हार, आदि। चार हाथ; नीचे के दो पद्मासन में गोद में रखे हैं; ऊपर के दोनों हाथ खण्डित।

६४. योगनारायण, (२५२८), ५६ से० मी०, कारीतलाई।

ऊपर वर्णित जैसी किन्तु उससे बड़ी। योगीश्वर के ऊपर पुष्पमालाएं लिये गंधर्व और नीचे दो बैठे हुये भक्त।

६५. वैष्णवी, (२५७०), (खंडित) ऊंचाई ३३ से० मी०, चौड़ाई ५१ से० मी०, कारीतलाई।

छाती से नीचे खण्डित। मस्तक पर किरीटमुकुट। वैष्णवी के चार हाथों में से नीचे के दो हाथ खंडित हैं। ऊपर के शेष दो हाथों में क्रमशः गदा और चक्र।

अन्य देव

६६. ब्रह्मा, (२५६०), ५१ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक पंद्रह-क)

ब्रह्मा चौकी पर कमलासन पर आसीन हैं। उनका मुख केवल एक है पर हाथ चार हैं। निचला दायां हाथ अभयमुद्रा में है और निचले बायें हाथ में अमृतघट हैं। ऊपर के दायें हाथ में शूल और बायें हाथ में पुस्तक है।

ब्रह्मा के तन पर यज्ञोपवीत पड़ा है। उनकी दाढ़ी लम्बी है और सिर पर बंधी पगड़ी विशेष प्रकार की है।

६७. ब्रह्माणी, (२५४३), ३५.५ से० मी०, कारीतलाई ।

कमर से नीचे का भाग खंडित । हाथ भी खंडित । चतुर्मुख। तन पर विविध आभूषण।

६८. सूर्य, (२५६८), ४९ से० मी०, कारीतलाई । (चित्रफलक पंद्रह-ख)

सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्य सम्मुख खड़े हैं । उनका मस्तक खण्डित हो गया है । वे कवच, यज्ञोपवीत और पैरों में लम्बे ऊंचे बूट पहने हैं । सूर्य का लंगड़ा सारथी अरुणि उनके रथ को हांक रहा है । सूर्य के दो हाथों में से बायां तो खंडित है और दायें हाथ में वे एक कमल लिये हुये हैं ।

विविध

६९. चौखट का खंड, (२५३३), लम्बाई १४० स० मी०, चौड़ाई ३८ से० मी०, ऊंचाई ३६ से० मी०, कारीतलाई । (चित्रफलक सोलह-क)

विष्णु मंदिर के द्वार की चौखट के इस खंड पर हाथी और सिंह की लड़ाई का दृश्य है । हाथी पूरा सजाधजा है । एक सिंह ने आक्रमण कर उसकी सूंड पकड़ ली है और दूसरा सिंह (संभवतः सिंहनी) कूदकर हाथी की पीठ पर चढ़ बैठा है । हाथी भी अपने पूरे जोर के साथ उन दोनों का मुकाबला कर रहा है ।

इस दृश्य के पश्चात एक अप्सरा की प्रतिमा है । उसके आगे वरुण और वरुणानी की मकर पर बैठी प्रतिमाएं हैं, वे अपने हाथों में कुंभ लिये हुए हैं । इस जोड़ी के आगे एक और अप्सरा खड़ी है जिसका एक हाथ निज के स्तन पर है और दूसरा हाथ अलस भाव से ऊपर उठा हुआ है । अप्सरा से आगे के भाग पर कमलगुच्छ तथा अन्य अलंकरण बने हैं ।

७०. परिचारक, (२५८२), ४८ से० मी०, कारीतलाई ।

अनेक आभूषण धारण किये है । उसके एक हाथ में चंवरी है और दूसरा हाथ कमर पर स्थित है ।

७१. वैष्णव परिचारक, (२५९१), ५८ से० मी०, कारीतलाई ।

इस तिपहले स्तंभखण्ड पर दो ओर एक-एक पुरुष खड़े हैं । दोनों का एक-एक हाथ निज की कमर पर स्थित है । दूसरे हाथ में एक तो पद्म लिये हुये है और दूसरा शंख ।

७२. परिचारक, (२५९८),१८ से० मी०, कारीतलाई ।

केवल धड़ बचा है । सिर और कमर से नीचे का भाग खण्डित है ।

७३. परिचारक, (२५९९), १८ से०मी०, कारीतलाई।

खंडित प्रतिमा।

७४. परिचारक का मस्तक, (००२८), १८ से० मी०, कारीतलाई।

परिचारक प्रतिमा का मस्तक मात्र।

७५. परिचारिका, (२५६१), ५३ से० मी०, कारीतलाई।

सम्मुख खड़ी परिचारिका के गले, कान आदि में विभिन्न आभूषण हैं। उसका बायां हाथ नीचे सीधा लटक रहा है और दायें हाथ में चंवरी है।

७६. परिचारिका, (२५७८), ५८.५ से० मी०, कारीतलाई।

परिचारिका का एक हाथ उसकी कमर पर रखा हुआ है और दूसरे हाथ में बिजौरा है।

७७. स्त्री का मस्तक, (०१०२), ११.५ से०मी०, कारीतलाई।

सुन्दर केशविन्यास; सीमन्त में मोतियों की लड़ी।

७८. स्त्री का मस्तक, (०१०३), ८ से० मी०, बिलहरी।

केश विन्यास आकर्षक; जूड़ा बंधा; कर्णाभरण पहने हुये।

७९. नायिका, (००२६), ५३.५ से० मी० ,कारीतलाई।

तन पर विभिन्न आभूषण धारण किये नायिका दायें खड़ी है। उसके दोनों हाथों में एक कलश है।

८०. नायिका, (००२७), ६३.५ से० मी०, कारीतलाई।

नायिका दायें खड़ी है। उसके नेत्र भावविभोर हैं। वह दोनों हाथों में पुष्प लिये उन्हें बिखेर रही है। कर्णाभरण, हार, एकावली, बाजूबन्द, कंकण और मेखला आदि आभूषण धारण किये हुये है।

८१. नायिका, (००२४), ३३ से० मी०, बिलहरी।

पुष्पमाला लिये बाये खड़ी है। वस्त्र बारीक और केशविन्यास रोचक। कर्णफूल, एक-लड़ी मुक्तामाला, मेखला, आदि आभूषण पहने हैं।

८२. नायिका, (२५६९), ५१ से० मी०, कारीतलाई।

ललितमुद्रा में खड़ी है। केश घुंघराले हैं। तन पर कुण्डल, हार, मुक्तामाला, केयूर,

कंकण, मेखला, आदि आभूषण धारण किये है। बायें हाथ में कमलपुष्प है। घुटनों से नीचे खंडित है।

८३. नायिका, (२६००), २६ से० मी०, कारीतलाई।

अनेक स्थान पर खण्डित है।

८४. सुरसुन्दरी, (२५३०), ८६ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक सत्रह-क)

सम्मुख ललितमुद्रा में खड़ी है। दोनों हाथ खण्डित हैं। केश आकर्षक ढंग से जूड़े में बंधे हैं जिसमें सीमन्तमणि देखा जाता है। वस्त्र बारीक। गले में हार और मुक्तामाला, कटि में मेखला और पैरों में नूपुर हैं।

८५. अप्सरा, (२५७५), ५६ से० मी०, कारीतलाई।

पैर और मुख खंडित। विभिन्न आभूषण पहने। दोनों हाथों में पुष्पमाला लिये।

८६. शालभंजिका, (२५७३), ५६ से० मी०, कारीतलाई

प्रकृति के दुष्प्रभाव से प्रतिमा के पाषाण को बहुत क्षति पहुंची है, वह गल गया है अन्यथा यह बड़ी ही सुन्दर प्रतिमा है। शालभंजिका का दायां हाथ ऊपर उठा है किन्तु बायां हाथ खंडित है। अधोवस्त्र कमर से नीचे सरक गया है।

८७. सुरसुन्दरी, (२५७४), ६८.५ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक सत्रह-ख)

सुरसुन्दरी दायें खड़ी है। उसके प्रत्येक अंग की बनावट सुरुचिपूर्ण है। भावविभोर और अधखुली आंखें, तिरछी भौहें, पतली कमर और कलश जैसे बड़े बड़े स्तन, सभी भव्य हैं। सुरसुन्दरी ने बारीक वस्त्र पहने हैं जिनके छोर उसके अंग पर लहरा रहे हैं। केश कलापूर्ण ढंग से जूड़े में बंधे हैं। कानों में कुण्डल, गले में हार और हवेल तथा कटि में मेखला है। बायां हाथ खंडित; दायें में चंवरी है।

८८. सुरसुन्दरी, (२५७९), ६६ से०मी०, कारीतलाई।

ऊपर वर्णित सुरसुन्दरी जैसी है पर अत्यन्त खण्डित।

८९. मिथुन, (००२९), ५३ से० मी०, कारीतलाई।

स्त्री पुरुष परस्पर सामने खड़े हैं, वे आलिंगन बद्ध हैं। स्त्री का दायां हाथ पुरुष के कंधे पर और बायां हाथ उसके लिंग पर है। पुरुष का बायां हाथ स्त्री के कंधे पर रखा है और दायें

हाथ से वह स्त्री के स्तन का स्पर्श कर रहा है। पुरुष वाममार्गी सन्यासी जान पड़ता है, उसकी जटाएं बंधीं हैं, हलकी दाढ़ी है, कानों में चमड़े के छल्ले पड़े हैं, गले में माला (संभवत: अस्थि-खंड़ों की) और यज्ञोपवीत है। सन्यासी की दायीं भुजा के नीचे दण्ड भी दबा है किंतु स्पष्ट नहीं है। स्त्री के केश संवारे हुये हैं। वह कर्णफूल, उपग्रीव, केयूर और कंकण आदि आभूषण पहने है।

९०. मिथुन, (००२५), ३० से० मी०, त्रिलहरी।

आलिंगन करते पुरुष का दायां हाथ तो अपनी कमर पर और बायां हाथ स्त्री के गले में पड़ा है। उसी प्रकार स्त्री ने अपते दोनों हाथ पुरुष के गले में डाल रखे हैं।

९१. मिथुन, (२५३४), ५८ से० मी०, कारीतलाई।

देवयुगल। दोनों के गले में कल्पद्रुम के पुष्पों की लम्बी मालाएं।

९२. मिथुन, (२५५०), ५४ से० मी०, कारीतलाई।

आलिंगन करते पुरुष का बायां हाथ स्त्री के कंधे पर। उसी प्रकार स्त्री का दायां हाथ पुरुष के कंधे पर।

९३. मिथुन, (२५६७), ३८ से० मी०, कारीतलाई।

पुरुष स्त्री के स्तन को छू रहा है और स्त्री का हाथ पुरुष के लिंग पर है।

९४. नट, (२५३६), २४ से० मी०, कारीतलाई।

एक आले में स्त्री-पुरुष ऊंचे आसन पर बैठे हैं। पुरुष की गोद में मृदंग रखा हुआ है। स्त्री प्रसन्न मुद्रा में है। संभवत: ये दोनों नट नटी है जो नाचने गाने के पश्चात एक स्थान पर बैठकर विश्राम कर रहे हैं। नटी के वस्त्र बारीक हैं कि उनके भीतर से उसके अंग दिखाई देते हैं।

९५. वानरयुगल, (००३२), ४३ से० मी०, कारीतलाई।

बंदरों का जोड़ा लीलासन में बैठा हुआ है। दोनों बंदरों के मुख खण्डित हैं। नर बंदर का बायां हाथ मादा के कंधे पर है। उसकी उठी हुई दुम ऊपरी छोर पर दिखाई देती है।

९६. महामतयुक्त हाथी, (००९९); २० से० मी०; कारीतलाई।

किसी जैन प्रतिमा का खंडित ऊपरी भाग। एक हाथी दायें बैठा है, उसकी पीठ पर से घण्टा लटक रहा है। दो दिव्य पुरुष हाथी पर सवारी कर रहे हैं। हाथी के सामने भी एक पुरुष खड़ा है।

९७. हाथी, (२६०१), २० से० मी०, कारीतलाई।

खण्डित।

९८. गजशार्दूल, (२५२१), ६९ से० मी०, कारीतलाई। (चित्रफलक सोलह-ख)
नीचे हाथी और उनके ऊपर शार्दूल जिसके गले में कण्ठा पड़ा है।

९९. गजशार्दूल, (२५४५), ६६ से० मी०, कारीतलाई।
उपरोक्त प्रकार।

१००. गजशार्दूल, (२५५९), ५१ से० मी०, कारीतलाई।
उपरोक्त प्रकार।

१०१. गजशार्दूल, (२५६२), ५६ से० मी०, कारीतलाई।
उपरोक्त प्रकार।

१०२. नरशार्दूल, (२५५२), ६६ से० मी०, कारीतलाई।
नीचे एक नर और उसके ऊपर शार्दूल।

१०३. सिंह, (२६०८), ३०.५ से० मी०, कारीतलाई।
खंडित है।

१०४. वास्तुखण्ड, (२५४४), ५६ से० मी०, कारीतलाई।
इस कीर्त्तिमुखनुमा वास्तुखण्ड के बीच में एक घेरे के भीतर कमल की कली दिखाई पड़ती है।

१०५. कीर्त्तिमुख, (२५२२), ५१ से० मी०, कारीतलाई।
बीचों बीच घेरे में सुन्दर मुखड़ा बना है।

१०६. कीर्त्तिमुख, (२५९०), ५३ से० मी०, कारीतलाई।
तरह तरह की रेखाएं और अलंकरण है। बीचों बीच एक विकृत मुख है जिसके मस्तक पर त्रिशूल हैं।

१०७. कीर्त्तिमुख, (२५९३), ५१ से० मी०, कारीतलाई।
खंडित। क्रमांक १०५ के समान।

१०८. वास्तुखण्ड, (२५४९), ८९ से० मी०, कारीतलाई।
अलंकरण युक्त।

१०९. वास्तुखण्ड, (२५९६), ६९ से०मी०, कारीतलाई।

शिखर का खंडित ऊरुभृंग जिसमें आमलकयुक्त छोटा सा शिखर बना है।

११०. वास्तुखण्ड, (२५६६), लम्बाई १०७ से० मी०, ऊंचाई ४१ से० मी०, कारीतलाई।

इसमें दो छोटे शिखरों के बीच एक अलंकृत चैत्य बना है।

१११. वास्तुखण्ड, (२६०७), ३० से० मी०, कारीतलाई।

नक्काशीदार।

११२. वास्तुखण्ड, (२५८३), ५१ से० मी०, कारीतलाई।

गवाक्ष तथा अन्य अलंकरण। नीचे एक आले में त्रिशूल लिये द्विभुज पुरुष खड़ा है जो संभवतः शिव हैं। उनका वाहन नन्दी भी उनके साथ है।

११३. वास्तुखण्ड, (२५९७), ५१ से० मी०, कारीतलाई।

ऊपर वर्णित क्रमांक ११२ जैसा किन्तु आले में संभवतः वरुण खड़े हैं। उनके हाथ में पाश अथवा नाग है। समीप ही मकर दिखाई पड़ता है।

११४. स्तंभखण्ड, (२६०३), २५ से० मी०, कारीतलाई।

कलशपत्र आदि बने हैं।

११५. बांट, (२६०२), गोलाई ६१ से० मी०, ऊंचाई, १५ से० मी०, कारीतलाई।

यह खण्डित गोल पत्थर तौलने का बांट जान पड़ता है।

११६. जांता, (२६१२), खंडित भाग की ऊंचाई १८ से० मी०, गोलाई ३३ से० मी०, कारीतलाई।

खण्डित। पीसने के जांते का ऊपरी भाग।

११७. स्तंभखण्ड, (२६०६), १८ से० मी०, कारीतलाई।

शीर्षभाग। कोई यक्ष बैठा हुआ है।

११८. स्तंभखण्ड, (२६१३), १८ से० मी०, कारीतलाई।

खंडित भाग।

११९. विद्याधर-युगल, (००३०), २६ से० मी०, कारीतलाई।

संभवतः किसी जैन प्रतिमा का ऊपरी खंडित भाग। विद्याधर स्त्री पुरुष उड़ते हुये दिखाई देते हैं। वे खंडित हैं। उनके नीचे एक अन्य स्त्री नृत्य कर रही है।

दक्षिण कोसलीय कलचुरिकालीन प्रतिमाएं

(बारहवीं शती ईस्वी)

बौद्ध

१. वरद मुद्रा में बुद्ध, (३७८०), २४ से० मी०, सिरपुर उत्खनन। (चित्रफलक एक-ख)

लाल बलुवा पत्थर की इस प्रतिमा में बुद्ध वरद मुद्रा में बैठे हुये हैं। उनका बायां हाथ खण्डित है और दायां हाथ गोद में रखा है जो वरद मुद्रा में है। बुद्ध के मस्तक पर नुकीली ऊंची टोपी है। वे संघाटी धारण किये हुये हैं। उनके कान लम्बे हैं जो कंधों को छूते हैं।

नीचे एक पांच पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है जिसमें बौद्धमंत्र ये धर्मा आदि पढ़ा जाता है।

जैन

२. ऋषभनाथ, (०००१), १०४ से० मी०, रतनपुर।(चित्रफलक अठारह-क)

ऋषभनाथ पद्मासन में ध्यानस्थ बैठे हैं। उनकी छाती पर श्रीवृक्ष चिह्न, मस्तक के पीछे प्रभामण्डल और मस्तक के ऊपर तिहरा छत्र है। तीर्थंकर के केश घुंघराले और उष्णीषबद्ध हैं, उनकी लटें कंधों तक लटक रही हैं। छत्र के दोनों ओर एक एक ऐरावत हाथी है जिस पर शची बैठी है। छत्र के ऊपर दुंदुभिक है। हाथियों के नीचे दोनों ओर विद्याधर और विद्याधरी पुष्पमालाएं लिये हैं। तीर्थंकर के दायें ओर सौधर्मेन्द्र और बायें ओर ईशानेन्द्र परिचारक के रूप में खड़े हैं।

चौकी पर पड़ी भूल पर ऋषभनाथ का लांछन वृषभ है जिसके सामने और पीछे एक-एक स्त्री और पुरुष तीर्थंकर की पूजा कर रहे हैं। चौकी के बीच में धर्मचक्र और उसके दोनों ओर एक-एक सिंह है। दायें ओर के सिंह के पास ऋषभनाथ का यक्ष गोमुख और बायें ओर के सिंह के पास उनकी यक्षी चक्रेश्वरी ललितासन में आसीन हैं।

३. ऋषभनाथ, (०००२), ८१ से० मी०, रतनपुर।

ऊपर वर्णित क्रमांक १ के सदृश किन्तु अधिक खंडित। भिन्नता केवल यह है कि कि इसमें तिहरे छत्र के स्थान पर केवल एक ही छत्र है और पुष्पवृष्टि करते विद्याधर भी दोनों ओर एक-एक ही हैं।

४. चन्द्रप्रभ, (०००७), ७३.५ से० मी०, रतनपुर। (चित्रफलक अठारह-ख)

अष्टम जैन तीर्थंकर चन्द्रप्रभ पद्मासन में ध्यानास्थ बैठे हैं। उनका दाहिना कंधा खण्डित हो गया है। तीर्थंकर के केश घुंघराले हैं। उनके मस्तक के पीछे प्रभामंडल, मस्तक के ऊपर तिहरा छत्र और छत्र के ऊपर दुंदुभिक है। छत्र के दोनों ओर ऐरावत हाथी तथा हाथी के नीचे पुष्पमालाएं लिये विद्याधर हैं। तीर्थंकर के दायें सौधर्मेन्द्र और बायें ईशानेन्द्र खड़े हैं।

चौकी पर कीर्त्तिमुखयुक्त झूल पड़ी है जिस पर चन्द्रप्रभ का लांछन चन्द्रमा तथा पूजा करते स्त्री पुरुष स्थित हैं। चौकी पर दोनों ओर एक-एक सिंह तथा चन्द्रप्रभ के यक्ष-यक्षी क्रमशः श्याम और ज्वालिनी बैठे हुये हैं।

५. तीर्थंकर, (०१०४), ६१ से० मी०, (खंडित), आरंग।

प्रतिमा अनेक खण्डों में है। कोई तीर्थंकर कायोत्सर्ग आसन में ध्यानस्थ खड़े हैं। घुटनों से नीचे का भाग उपलब्ध नहीं है। तीर्थंकर की छाती पर श्रीवृक्ष, पीछे प्रभामंडल और मस्तक के ऊपर तिहरा छत्र है। छत्र के दोनों ओर सुसज्जित हाथी हैं जिन पर महावत बैठा है। हाथियों के नीचे पुष्पमाला लिये विद्याधर।

६. तीर्थंकर, (०१०५), ५९ से० मी०, आरंग।

ऊपर वर्णित क्रमांक ५ के सदृश। इसका भी नीचे का भाग अनुपलब्ध है।

७. तीर्थंकर प्रतिमा का भाग, (०००५), ३३.५ से० मी० (खंडित), रतनपुर।

किसी जिनप्रतिमा का मस्तक और छत्रादियुक्त ऊपरी भाग।

शैव

८. शिवलिंग, (३७७५), ४४ से० मी० वृत्त, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर का जलहरीयुक्त।

९. उमामहेश्वर, (३७९६), २१ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लालरंग के बलुवा पत्थर के इस पट्ट पर उठी हुई चौकोर किनारी के बीच शिवपार्वती बैठे हुये हैं। पार्वती शिव की गोद में बठी हैं। दोनों ने ऊंचे मुकुट तथा अन्य आभूषण पहने हैं। शिव के तन पर यज्ञोपवीत भी है। शिवजी के तीन नेत्र हैं। उनके दायें हाथ में त्रिशूल हैं और बायां हाथ पार्वती के कंधे पर है। पार्वती के बायें हाथ में दण्ड जैसा कोई आयुध है।

पट्ट की चौकी पर नन्दी, गणेश, गण आदि की प्रतिमाएं हैं।

१०. उमामहेश्वर, (३७८९), २८ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

सफ़ेद रंग के बलुवा पत्थर के इस पट्ट में शिव पार्वती पहले जैसे ही बैठे हैं। उनके ऊपर छत्र है। शिव के एक हाथ में पाश है और उसी प्रकार पार्वती का एक हाथ बालक के ऊपर रखा है जो संभवतः स्कंद है। इस पट्ट पर पार्वती का वाहन सिंह और शिव का वाहन नन्दी तथा नाग और अनेक भक्त पुरुष दिखाये गये हैं। पट्ट के बायें ओर गणेश और दायें ओर कार्तिकेय हैं जिनके साथ उनका वाहन मयूर भी है।

११. उमामहेश्वर, (३७९८), २६ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल रंग के बलुवा पत्थर का पट्ट। पूर्वप्रकार। शिव के दायें हाथ में त्रिशूल और बायां हाथ पार्वती के कंधे पर। गणेश, नन्दी, नाग, गण, भक्त पुरुष आदि पूर्ववत्। पट्ट बहुत ही खण्डित है।

१२. उमामहेश्वर, (३७८४), १९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पहले के समान पर चौकी सादी।

१३. उमामहेश्वर, (३८०३), २० से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित, केवल निचला भाग।

१४. उमामहेश्वर, (३८१४), १५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित केवल निचला भाग, चौकी पर गणेश।

१५. उमामहेश्वर, (३८१५), १५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित, केवल निचला भाग।

१६. उमामहेश्वर, (३८१८), २३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित।

१७. उमामहेश्वर, (३८१९), कई टुकड़ों में, सिरपुर उत्खनन।

बहुत ही खडित।

१८. उमामहेश्वर, (३७७७), ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

ऊपर वर्णित पट्टों के समान शिवपार्वती बैठे हुये।

१९. उमामहेश्वर, (३७८१); ११ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

उपरोक्त जैसा ही।

२०. उमामहेश्वर, (३७९४), १७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पूर्वोक्त प्रकार।

२१. उमामहेश्वर, (३७९३), १९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पहले के समान पर पार्वती का मुख खण्डित।

२२. उमामहेश्वर, (३८०८), १३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

निचला हिस्सा खण्डित।

२३. उमामहेश्वर. (३८०२), खण्डित, सिरपुर उत्खनन।

अनेक खण्डों में से एक।

२४. उमामहेश्वर. (०००९), ११२ से० मी०, रतनपुर। (चित्रफलक उन्नीस क)

इस प्रतिमा में शिव लीलासन में बैठे हैं। पार्वती उसी प्रकार शिव की बायों जांघ पर बैठी हैं। दोनों चतुर्भुज हैं। शिव के दाहिने उपरले और निचले हाथों में क्रमशः त्रिशूल और मातुलुंग हैं। उनके बायें उपरले हाथ में नाग हैं और निचला हाथ पार्वती की पीठ की तरफ से आकर उनके बायें स्तन का स्पर्श कर रहा है। पार्वती के बायें उपरले और निचले हाथों में क्रमशः दर्पण और पोथी हैं; उनके दायें उपरले हाथ में कमल है जबकि दायां निचला हाथ शिव के गले में पड़ा है।

शिव-पार्वती के पीछे प्रभामण्डल है जिनके दोनों ओर उड़ता हुआ एक-एक गंधर्व है। शिव के मस्तक पर जटामुकुट है जिसपर चन्द्रमा और गंगा स्थित हैं; कानों में कुण्डल, गले में हार और छःलड़ी मुक्तामाला तथा हाथ-पैरों में भी विभिन्न आभूषण हैं। पार्वती ने भी विविध आभूषण पहन रखे हैं।

शिव और पार्वती के पास खड़े गण खट्वांग लिये हुये हैं। दोनों के पैर के बीच संभवतः भृङ्गि है किन्तु वह निर्मांस नहीं है। चौकी पर एक गण और है जो ढ़ाल तलवार लिये है। उसके दाहने शिव का वाहन नन्दी और बायें पार्वती का वाहन सिंह बैठा है।

२५. पार्वती (०००४), ७७ से० मी०, रतनपुर।

पार्वती एक आले में कमलासन पर सम्मुख खड़ी है। उसके पीछे अलंकृत प्रभामण्डल है। गौरी के तन पर जटामुकुट, कर्णावतंस, हार, बाजूबन्द, आदि विविध आभूषण हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें से निचले दोनों हाथ खण्डित हैं। उपरले दायें हाथ में शिवलिंग है जो एक वृत्त के मध्य स्थित है। उसी प्रकार उपरले बायें हाथ में वृत्त में स्थित गणेश प्रतिमा है।

पार्वती के मस्तक के दोनों ओर एक एक गंधर्व है जो पुष्पमाला लिये है। पैरों के निकट चंवरधारिणी खड़ी है। दाहने वाहन है किन्तु अस्पष्ट होने से पहचाना नहीं जाता। देवी के दोनों ओर एक एक स्तंभ खड़ा है जिसके मध्यभाग में कोई यक्ष ललितासन में बैठा है। उसके दायें हाथ में दण्ड और बायें में कलश है।

२६. पार्वती (००१९), १३.५ से० मी०, डीपाडीह।

पार्वती सम्मुख खड़ी है। वे चतुर्भुजा हैं। उनके उपरले दोनों हाथों के आयुध अस्पष्ट हैं किन्तु निचले दायें हाथ में संभवतः अक्षसूत्र और निचले बायें हाथ में संभवतः कमण्डलु है। पार्वती के दोनों ओर एक एक द्विभुजा परिचारिका और एक एक अग्निकुंड है। वाहन सिंह? नीचे दाहिने खड़ा दीखता है।

२७. पार्वती, (३७९०), २६ से० मी०, सिरपुर उत्खनन। (चित्रफलक बीस-ख)

लाल रंग के बलुआ पत्थर के इस पट्ट पर बनी पार्वती की प्रतिमा बहुत ही सुन्दर है। पार्वती त्रिभंग मुद्रा में सम्मुख खड़ी है। उनके बायें हाथ में कलश और दायें हाथ में अक्ष-माला है। उनके दायें ओर शिवलिंग बना है और बायें ओर गणेश की प्रतिमा है। वाहन सिंह तथा भक्तों की छोटी-छोटी आकृतियां भी पट्ट पर बनी है।

२८. पार्वती, (३७७९), २२ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह लाल रंग के बलुवा पत्थर का पट्ट सिरपुर के स्वस्तिक विहार में प्राप्त हुआ था। पार्वती समभंगमुद्रा में सम्मुख खड़ी हैं, उनका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और बायें हाथ में कलश है।

२९. पार्वती, (३७९९), २३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

सफेद बलुवा पत्थर के इस पट्ट में पार्वती सम्मुख खड़ी है। उनके दोनों हाथ नीचे लटक रहे हैं। दायें ओर को शिवलिंग और बायें गणेश हैं। साथ में अनेक भक्त स्त्री-पुरुष।

३०. पार्वती, (३८०९), १४ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पार्वती सम्मुख खड़ी है। पट्ट दायीं ओर खंडित है।

३१. पार्वती, (३८१३), १९ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

पार्वती सम्मुख खड़ी है। खंडित पट्ट।

३२. महिषासुरमर्दिनी, (३८०७), १८ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

इस पट्ट पर महिषासुर का संहार करती दुर्गा की चतुर्भुज प्रतिमा है जो अपने दायें

ओर के दोनों हाथों से भाला पकड़े हुये है। भाला दैत्य के शरीर में धंसा हुआ है। दुर्गा के बायें उपरले हाथ में एक ओर आयुध है और बायें निचले हाथ से उसने दैत्य की गरदन मरोड़ रखी है।

३३. महिषासुरमर्दिनी, (३७९५), २० से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर के इस पट्ट पर दुर्गा की प्रतिमा पहले वर्णित जैसी है किन्तु इसमें दुर्गा के दायें उपरले हाथ में तलवार है तथा दैत्य की गरदन भी दायें ओर मरोड़ी जा रही है।

महिषासुरमर्दिनी का बायां पैर दैत्य के शरीर पर धरा है।

३४. महिषासुरमर्दिनी, (३७९२), १७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

यह पट्ट नीले रंग के बलुवा पत्थर का है। देवी की प्रतिमा ऊपर की भांति है पर खंडित है।

३५. महिषासुरमर्दिनी, (३८०६), २८ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

उपरोक्त प्रकार। खण्डित।

३६. महिषासुरमर्दिनी, (३८४४), १४ से० मी०, सिरपुर उत्खनन

खण्डित।

३७. महिषासुरमर्दिनी (३७९१), १६ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

इस पट्ट में देवी के हाथ में त्रिशूल है जिससे वह असुर का संहार कर रही है।

३८. कार्त्तिकेय, (०००८), ९१.५ से० मी०, गोमरी। (चित्रफलक उन्नीस-ख)

यह प्रतिमा अधिक खण्डित होने पर भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें देवों के सेनापति कार्तिकेय कमलासन पर त्रिभंगमुद्रा में सम्मुख खड़े हैं। उनके छह मुख और बारह हाथ हैं। उनमें से अंतिम मुख पीछे छिप गया है। उनके दाहने ओर के छह हाथों में से तीन में वज्र, खड्ग, और शूल क्रमशः हैं, चौथा वरदमुद्रा में है, अन्य दो हाथों के आयुध लुप्त हैं। बायें ओर के छह हाथों में से, एक तो अभयमुद्रा में ऊपर उठा हुआ है, एक खण्डित है और बाकी चार में क्रमशः ढाल, अनिश्चित आयुध, धनुष और ताम्रचूड हैं।

कार्त्तिकेय की छाती पर श्रीवत्स चिह्न है। वे जटामुकुट धारण किये हैं तथा उसी प्रकार उनके कानों में कुण्डल, गले में हार, कटि में मेखला और पैरों में नूपुर आदि आभूषण हैं।

कार्त्तिकेय का वाहन मयूर? उनके दायें खड़ा है और अपने स्वामी के नीचे लटके दायें हाथ को छू रहा है। मयूर के पीछे चंवरधारिणी खड़ी है। बायें ओर एक दढ़ियल पुजारी है जिसके पीछे एक और परिचारिका खड़ी हैं। उसका हाथ ऊपर उठा हुआ है।

३९. गणेश, (३८०१), १५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

इस पट्ट में गणेश सम्मुख बैठे हुये हैं। उनकी तोंद बड़ी सी है। उनका दायां हाथ वरद मुद्रा में है और बायें हाथ में मोदकपात्र है, जिसमें से एक मोदक वे अपनी सूंड से उठा रहे हैं।

४०. गणेश. (३७८३), ७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर के इस पट्ट में गणेश उपरोक्त प्रकार बैठे हुये हैं। प्रतिमा छोटी होते हुये भी बड़ी सुन्दर है

४१. गणेश. (३८४७), ६ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित। केवल निचला खण्ड जिसमें गणेश का तोंद वाला भाग दिखाई देता है।

वैष्णव

४२. त्रिविक्रम विष्णु. (००१८), २० से० मी०. डीपाडीह (चित्रफलक बीस-क)

विष्णु कमल पर सम्मुख खड़े हैं। उनके पीछे कमलाकृति प्रभामण्डल है। वे सादे आभूषण धारण किये हैं। उनके चार हाथ हैं। दायें उपरले हाथ में गदा, दायें निचले हाथ में पद्म, बायें उपरले हाथ में चक्र, और बायें निचले हाथ में शंख है। इस प्रकार की आयुध योजना से यह विष्णु की त्रिविक्रममूर्ति हैं। त्रिविक्रम के दोनों ओर एक एक पुजारिन घुटने टेक रही है।

४३. स्थानक विष्णु, (००१२), १५२ से० मी०, रतनपुर (मुखचित्र)

विष्णु कमल पर सम्मुख खड़े हैं उनके मस्तक के पीछे अलंकृत प्रभामंडल है जिसके दोनों ओर दो दो गंधर्व उड़ रहे हैं जिनके हाथों में पुष्पमालाएं हैं। विष्णु किरीटमुकुट, कुण्डल, हार, छह लड़की मोतीमाला, बाजूबन्द, कंकण, चौड़ी मेखला, नूपुर आदि आभूषण पहने हैं। उनकी छाती पर श्रीवत्स चिह्न है तथा वैजयन्तीमाला घुटनों तक नीचे झूल रही है।

विष्णु के चार हाथ हैं। दाहने ओर के दोनों हाथ तो खंडित हैं, पर बायें ओर के उपरले हाथ में चक्र और निचले हाथ में गदा है। उनके चरणों के पास दोनों ओर एक एक स्त्री और एक एक पुरुष है। उनमें से पुरुष तो घुटने टेक कर पूजा कर रहे हैं और स्त्रियां पुरुषों के पीछे खड़ी हैं।

मूलनायक प्रतिमा के तीन तरफ की पट्टियों पर दशावतार की प्रतिमाएं हैं जो दायें नीचे से प्रारम्भ होती हैं। वे क्रमशः इस प्रकार हैं; मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, राम, परशुराम, बलराम, बुद्ध और कल्कि विष्णु की चरणचौकी पर बीच में लक्ष्मी बैठी है।

दोनों ओर स्थित नागी तथा अन्य भक्त लक्ष्मी की पूजा कर रहे हैं। प्रतिमा पर एक छोटा सा लेख उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिमा का निर्माण कराने वालों के नाम हैं यथा, रावत माल्ह, राउत फ़ीजाक, राउत श्री प्रतापसिंह, राउत चाहड, रावत फाल्हण, सूल्हण।

मूलनायक विष्णु की परिचारिकाओं को उन के दोनों तरफ़ स्थित स्तंभ पर बनाया गया है। ये दोनों परिचारिकाएं कमल पर त्रिभंगमुद्रा में खड़ी हैं। वे विविध आभूषण पहने हैं और उनका केशविन्यास अनूठा है। दोनों परिचारिकाएं क्रमशः श्री और भू, द्विभुजा हैं। उनके हाथों में चंवरी हैं।

४४. विष्णु, (३७७८), २१ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर के इस पट्टपर विष्णु सम्मुख खड़े हैं। उनका मुकुट ऊंची टोपी के समान है। उनके ऊपर के दो हाथों में तो शंख और चक्र स्पष्ट हैं किन्तु नीचे के हाथों के आयुध स्पष्ट नहीं है।

४५. विष्णु, (३७७६), १७ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर का पट्ट। विवरण ऊपर के अनुसार।

४६. विष्णु, (०५५०), २.५ से० मी०, बिलासपुर जिला।

चतुर्भुज विष्णु सम्मुख खड़े हैं। आयुध अस्पष्ट।

४७. विष्णु, (३७८२), ५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

लाल बलुवा पत्थर का पट्ट। चतुर्भुज विष्णु सम्मुख खड़े हैं।

४८. विष्णु, (३८२७), २३ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

सफेद बलुवा पत्थर के बने इस पट्ट में विष्णु पूर्ववत् खड़े दिखाई देते हैं। उनके मस्तक पर किरीटमुकुट तथा तन पर अन्य आभूषणों के साथ वैजयन्ती माला भी है। सभी आयुध खंडित हैं

विविध

४९. सूर्य, (३८००), २५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

सफेद रंग के बलुवा पत्थर के इस पट्ट में चौकी पर सूर्य सम्मुख खड़े हैं। उनके तन पर आभूषण हैं और पैरों में बड़े और ऊंचे जूते। सूर्य की टोपी ऊंची है। उनके दोनों हाथों में कमल हैं जो गदा जैसे दिखते हैं। सूर्य के परिचारक चंवरी लिये खड़े है।

५०. सूर्य, (३७९७), २० से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

अत्यन्त घिसी हुई प्रतिमा।

५१. सूर्य, (३८४८), १५ से० मी०, सिरपुर उत्खनन।

खण्डित और घिसी हुई प्रतिमा।

५२. मस्तकविहीन परिचारक, (००८०), २३ से० मी०, आरंग।

कोई पुरुष सामने खड़ा है। उसका मस्तक और टांगे खण्डित हैं। वह धोती पहने हैं तथा उसके गले में मूंगामाला और कलाइयों में कड़े हैं। उसका बायां हाथ कमर पर तथा दायें हाथ में कोई फल है।

५३. राजपुरुष, (०५१५), ७१ से० मी०, रतनपुर। (चित्रफलक इक्कीस-क)

यह किसी राजा, मंत्री या उच्च अधिकारी की प्रतिमा जान पड़ती है। रत्नपुर के कलचुरि राजाओं के समय में इस प्रकार की प्रतिमाओं का निर्माण होने लगा था और मंदिरों का निर्माण कराने वाले विशिष्ट व्यक्ति वहीं अपनी प्रतिमाएं भी स्थापित कर देते थे।

प्रस्तुत प्रतिमा में कोई राजा या सामन्त पद्मासन में बैठा है और अपने दोनों हाथ जोड़े हुये है जिनमें वह संभवतः कमलपुष्प लिये है। राजा के मस्तक के पीछे अलंकृत प्रभामण्डल और मस्तक के ऊपर छत्र है। वह मुकुट तथा अन्य आभूषण धारण किये हुये है। उनके मूछें भी हैं और लम्बी दाढ़ी भी। प्रभामण्डल के दोनों ओर मालाएं लिये गंधर्व उड़ रहे हैं। उसी प्रकार राजा के दोनों ओर भी एक एक परिचारिका लीलासन में बैठी है।

५४. चंवरधारिणी, (००१०), ९४ से० मी०, रतनपुर। (चित्रफलक इक्कीस-ख)

किसी प्रतिमा के परिकर का स्तंभ जिसपर एक परिचारिका खड़ी है। वह सर्वाभरण-भूषिता है। उसके दायें हाथ में चंवरी और बायें हाथ में कमलनाल है। स्तंभ पर दोव्याल भी हैं।

५५. स्तंभखण्ड, (००८१), २२ से० मी०, आरंग।

चौकोन शिखराकार स्तंभशीर्ष जिसके एक तरफ संभवतः भूमिस्पर्शमुद्रा में बुद्ध बैठे हैं।

गोंड़कालीन प्रतिमाएं

(सोलहवीं-सत्रहवीं शती ईस्वी)

१ गोंड़ योद्धा, (०५१०), ६१ से० मी०, सिरपुर, (चित्रफलक बाईस-क)

सुसज्जित घोड़े पर सवार गोंड़ योद्धा या सरदार बायें जा रहा है, वह चुस्त पायजामा पहने है। उसके जूतें, शिरस्त्राण और मूछें मुसलमानी ढंग की हैं। सरदार का दायां हाथ अपनी जांघ पर रखा है और वह बायें हाथ से घोड़े की लगाम थामे है। सरदार की कमर पर फेंटा बंधा है जिसमें एक कटार खोंसी हुई है, उसकी तलवार दाहने घुटने पर है। सवार के पीछे एक परिचारक उसका छत्र लिये चल रहा है। आगे भी एक सिपाही चल रहा है जिसके दायें हाथ में भाला और बायें हाथ में ढ़ाल है। एक दूसरा परिचारक अपने कंधे पर कांवर धरे जा रहा है। कांवर में एक ओर जलपात्र और दूसरी ओर भोजन सामग्री की टोकनी है।

२ गोंड़ योद्धा, (०५११), ५४ से० मी०, सिरपुर। (चित्रफलक बाईस-ख)

योद्धा, उपर वर्णित प्रतिमा के योद्धा के समान घोड़े पर सवार है किन्तु इसके दायें हाथ में चाबुक है और दायें घुटने पर ढाल रखी है। छत्रवाहक, योद्धा के पीछे पीछे चल रहा है। घोड़े के बीच में एक कुत्ता है जो दो नौकरों के बीच भाग रहा है

३ गोंड़ सिपाही, (०५१२), ६१ से० मी०, सिरपुर। (चित्रफलक तेईस-क)

सिपाही का दायां हाथ खण्डित है ; बायें में अलंकृत ढ़ाल है। कमर के फेंटे में कटार खोंसी हुई है।

४ गोंड़ सिपाही, (०५१३), ४६ से० मी०, सिरपुर। (चित्रफलक तेईस-ख)

दायें हाथ में तलवार और बायें हाथ में ढ़ाल लिये भागा जा रहा है।

५ सती स्मारक (०५१४), ५३ से० मी०, रायपुर जिला।

कोई सती पालथी मारे सम्मुख बैठी है।

६ सती स्मारक स्तंभ, (०५१७), १६७ से० मी०, रायपुर जिला

स्तंभ की चौकी सादी और चौकोन है, उस पर स्थित दण्ड पर एक सिंह और कीर्तिमुख है। शीर्षभाग भी चौकोन है और उस पर कमल तथा अन्य बेल बूटे बनाये गये हैं। सबसे ऊपर का भाग अंडाकार है जिसके सामने के भाग में दो हाथ दिखाई पड़ते हैं जो भिन्न भिन्न स्त्रियों के हैं। हाथों में चूड़ियां हैं।

७ बुरा मत कहो, (२४०५), २४ से० मी०, राजनांदगांव। चित्रफलक चौबीस)

बंदर मुख पर एक हाथ रखकर उसे बंद किये हुये है।

८ बुरा मत देखो, (२४०७), २४ से० मी०, राजनांदगांव।
(चित्रफलक चौबीस)

बंदर ने अपने दोनों हाथ मुख के पास रख लिये हैं जिनसे आंखें बंद करने की अभिव्यक्ति होती ह।

९ बुरा मत सुनो, (२४२६), २४ से० मी०, राजनांदगांव। (चित्रफलक चौबीस)

बंदर एक हाथ से अपना एक कान बंद किये है।

सहायक ग्रन्थ

अपराजित पृच्छा, वृहत्संहिता, विष्णुधर्मोत्तर, समरांगणसूत्रधार, चतुर्वर्ग-चिन्तामणि, देवतामूर्तिप्रकरण; रूपमण्डन, मानसार, अंशुमद्भेद, शारदा-तिलकतंत्र
साधनमाला
प्रतिष्ठासारसंग्रह, प्रतिष्ठासारोद्धार,

राय कृष्णदास : भारतीय मूर्तिकला

जो० एच० खरे : मूर्तिविज्ञान

डा० द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल : प्रतिमा विज्ञान

टी० ए० गोपीनाथ राव : एलीमेंट्स आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी जिल्द, १-२

जितेन्द्रनाथ बानर्ज्या : दि डेवलपमेण्ट आफ हिन्दू आइकोनोग्राफी

बृन्दावन भट्टाचार्य : इंडियन इमेजेज
जैन आइकोनोग्राफी

विनयतोष भट्टाचार्य : इंडियन बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी

नलिनीकांत भट्टशाली : कैटलाग आफ बुद्धिस्ट एण्ड ब्राह्मनिकल स्कल्पचर्स इन दि ढाका म्यूजियम

शास्त्री एच० कृष्ण : साउथ इंडियन इमेजेज आफ गाड्स एण्ड गाडेसेज

कुमारस्वामी ए० के० : हिस्ट्री आफ इंडियन एण्ड इंडोनेशियन आर्ट

स्मिथ वी० ए० : हिस्ट्री आफ फाइन आर्ट्स इन इंडिया एण्ड सीलोन
जैन स्तूप एण्ड अदर एंटिक्विटीज आफ मथुरा

सरस्वती एस० के : ए सर्वे आफ इंडियन स्कल्पचर

बनर्जी आर० डी० : हैहयज आफ त्रिपुरी एण्ड देअर मानुमेण्ट्स

भण्डारकर आर० जी० : वैष्णविज्म एन्ड देअर माइनर रिलीजस सिस्टम्स

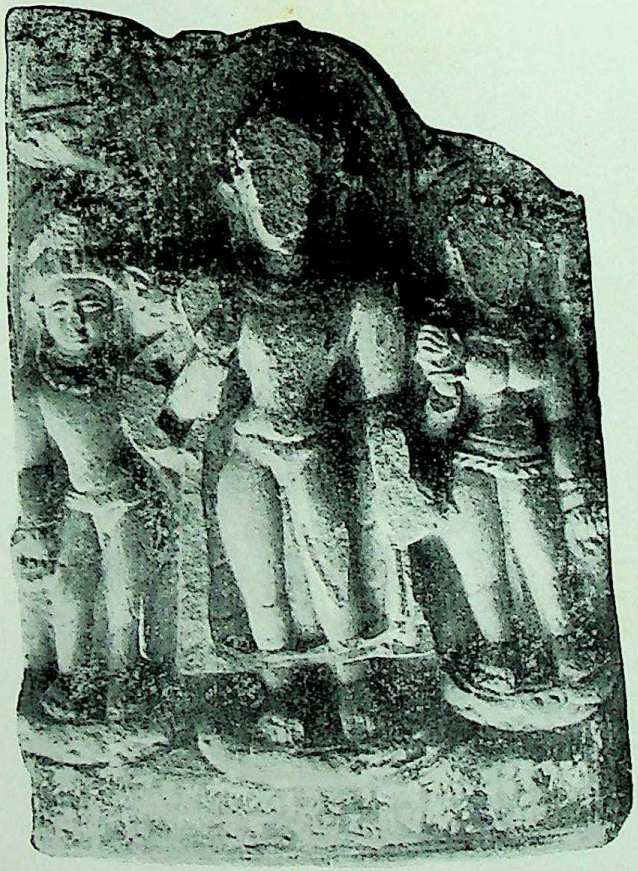

(क) तारा और अवलोकितेश्वर के साथ बुद्ध; ९वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

(ख) वरद मुद्रामें; ११वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

चित्रफलक एक

चित्रफलक दो

(क) मंजुश्री; ८वीं–९वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर

(ख) मंजुश्री; ८वीं–९वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर

(क) पार्श्वनाथ; ९वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर

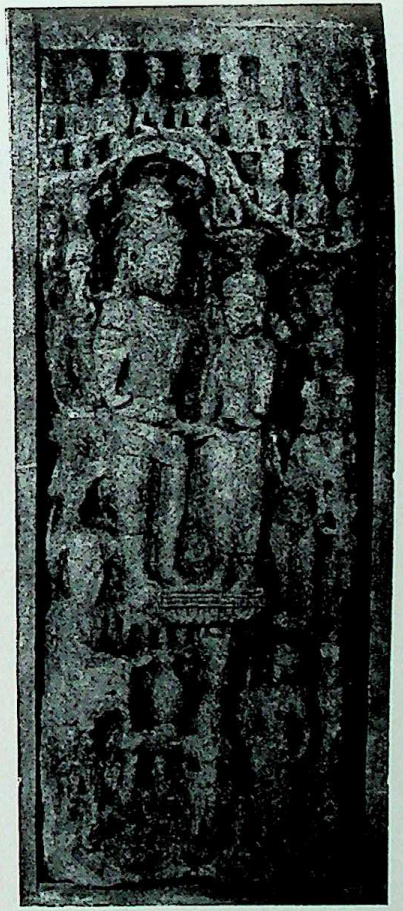

(ख) कल्याणसुन्दरमूर्ति शिव; ९वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

चित्रफलक तीन

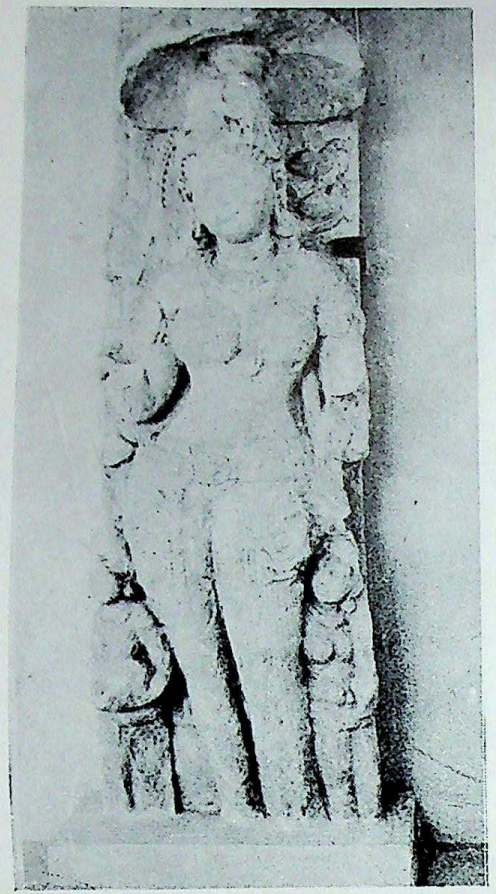

(क) गंगा; ८वीं-९वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

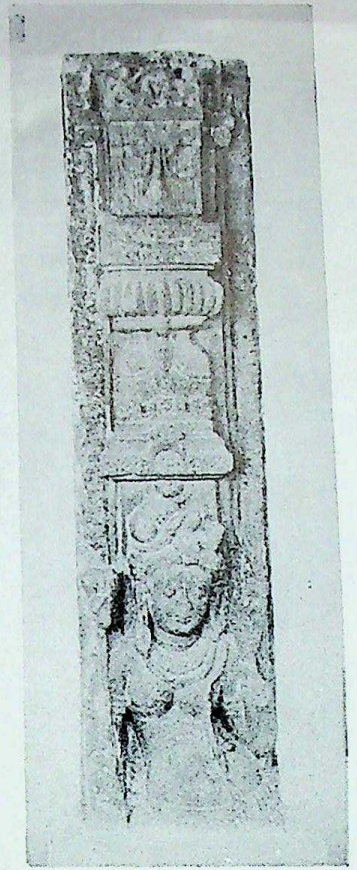

(ख) स्त्री प्रतिमा युक्त स्तंभ;
८वीं-९वीं शती ईस्वी;
धमतरी, जिला रायपुर

(ग) नागराज; ८वीं-९वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

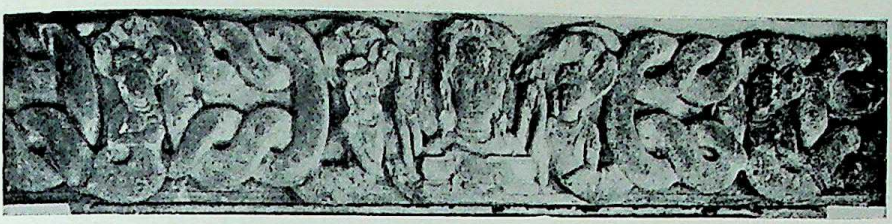

(क) शिवमंदिर के द्वार की चौखट का खंड; ८वीं-९वीं शती ईस्वी; धमतरी, जिला रायपुर

(ख) भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध; ११ वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) ऋषभनाथ; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

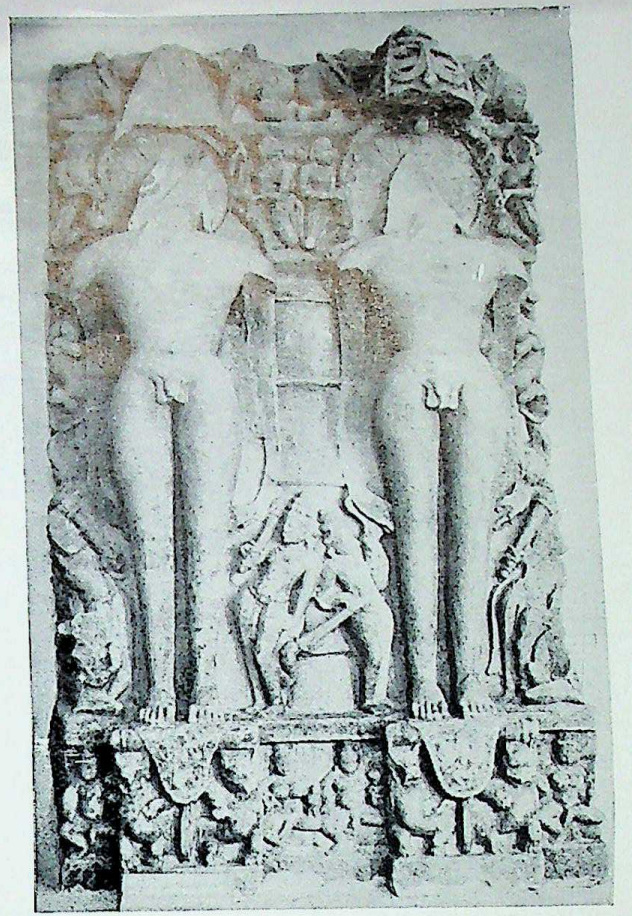

(ख) अजितनाथ और संभवनाथ; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

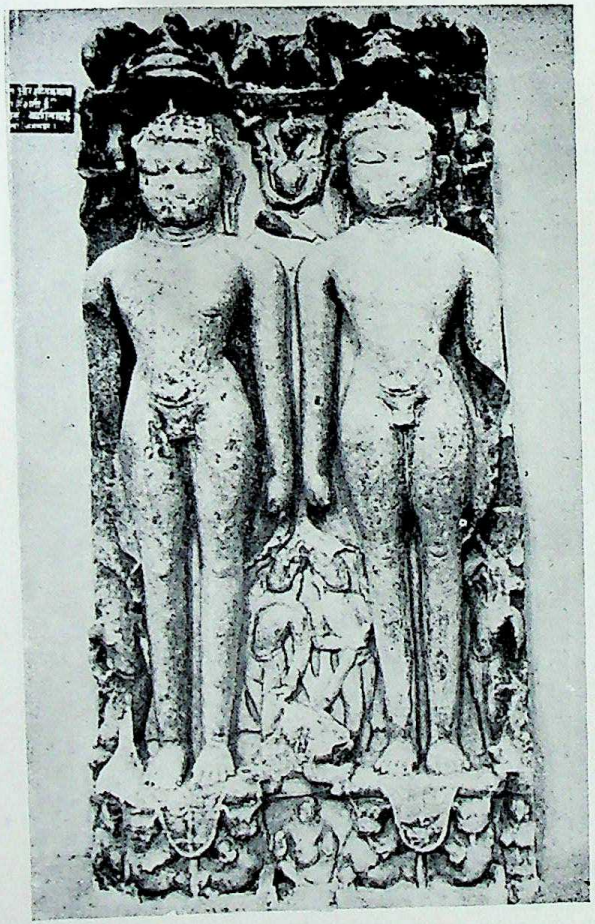

(क) पुष्पदंत और शीतलनाथ; ११ वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) पार्श्वनाथ; ११ वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) महावीर; ११वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

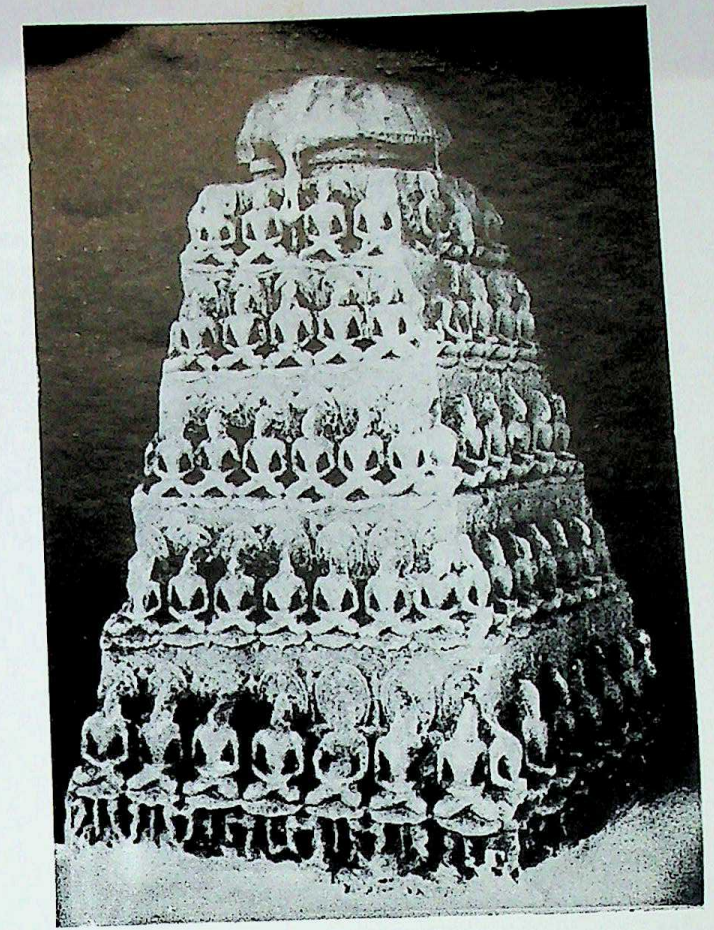

(ख) सहस्रकूट जिन चैत्यालय; ११ वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) अम्बिका या आम्रादेवी; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) अम्बिका या आम्रादेवी; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

चित्रफलक नौ

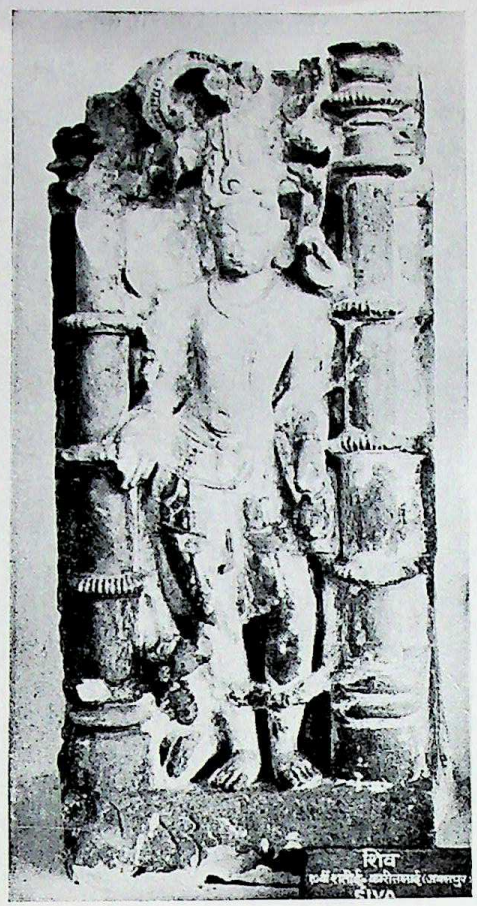

(क) शिव; १०-वीं ११ वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) भैरव; ११ वीं शती ईस्वी;
बिलहरी, जिला जबलपुर

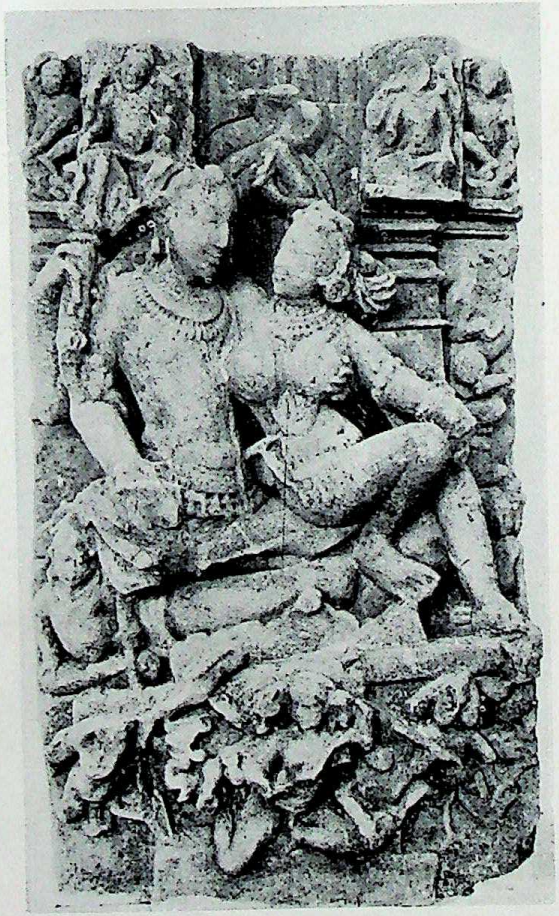

(क) उमामहेश्वर; ११ वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) पार्वती; १०वीं–११वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

चित्रफलक बारह

(क) नारायण; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) गोविंद; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

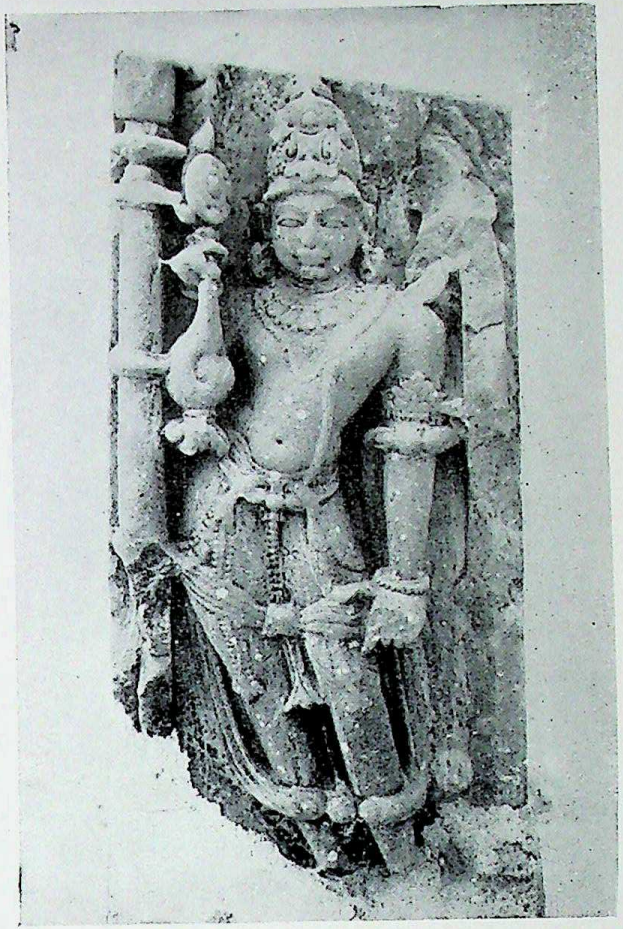

(ग) मधुसूदन; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

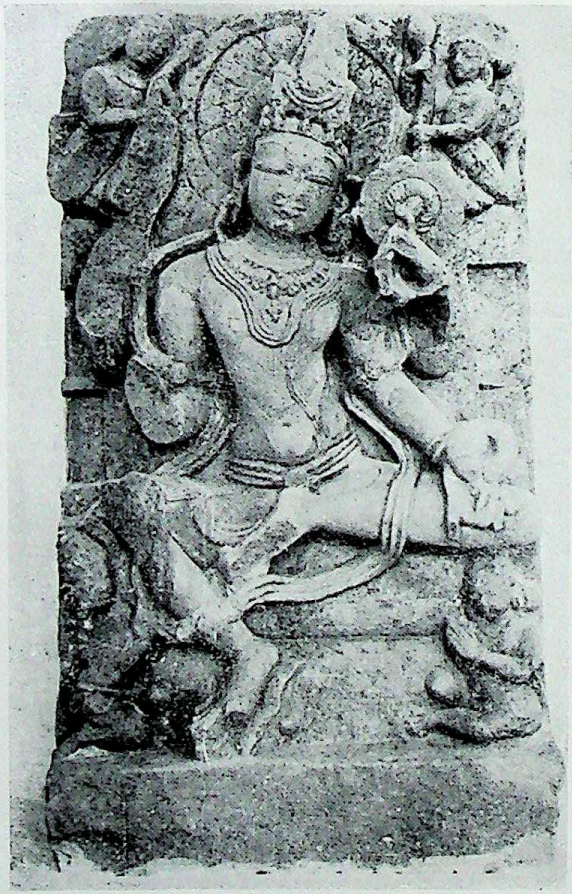

(क) अच्युत; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

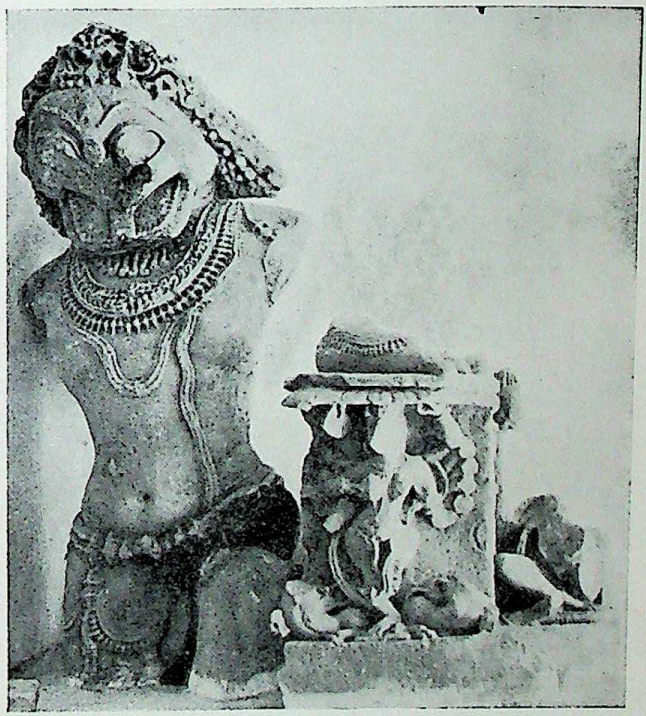

(ख) नृसिंह; १०वीं शती ईस्वी; कारीतवाई, जिला जबलपुर

चित्रफलक बारह

(क) नारायण; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) गोविंद; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

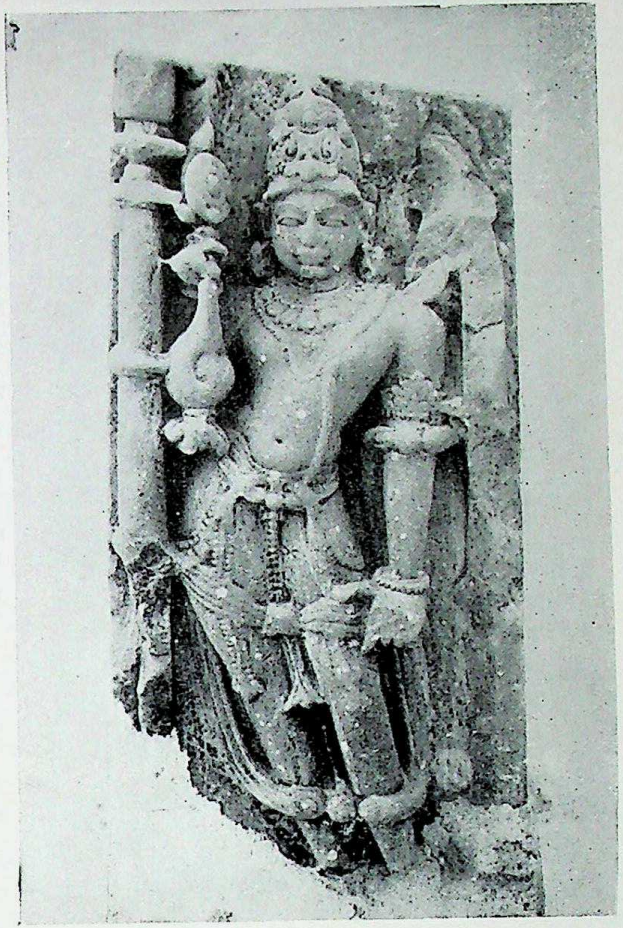

(ग) मधुसूदन; १० वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) अच्युत; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

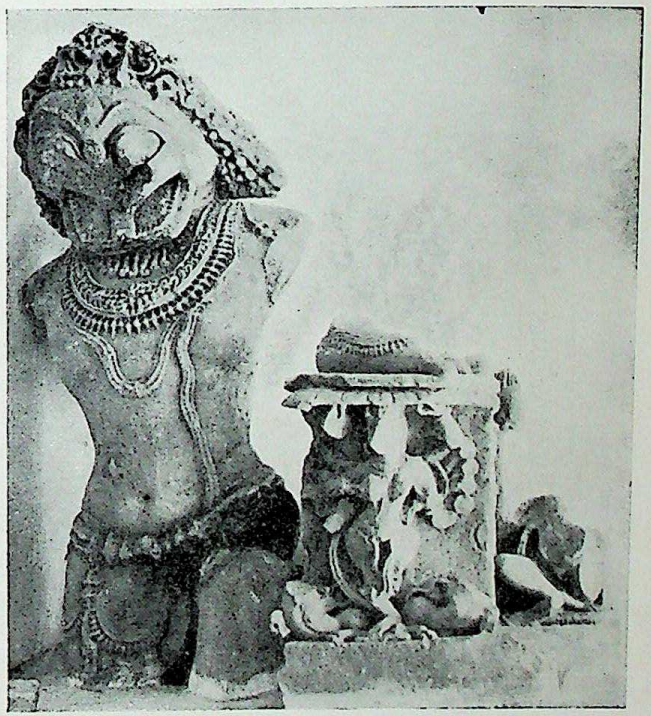

(ख) नृसिंह; १०वीं शती ईस्वी; कारीतवाई, जिला जबलपुर

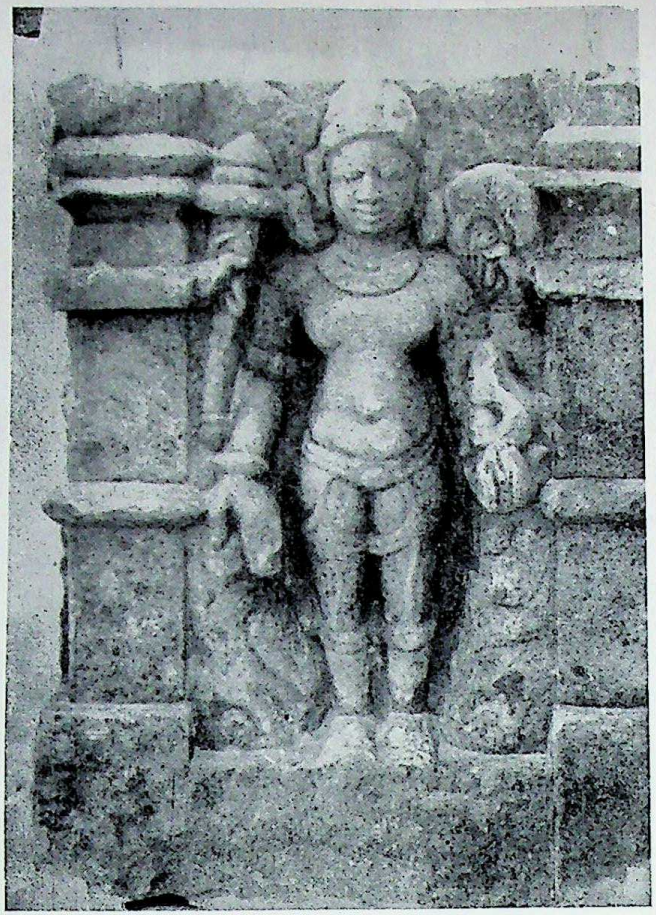

(क) त्रिविक्रम; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) गरुणनारायण; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) ब्रह्मा; ११वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर

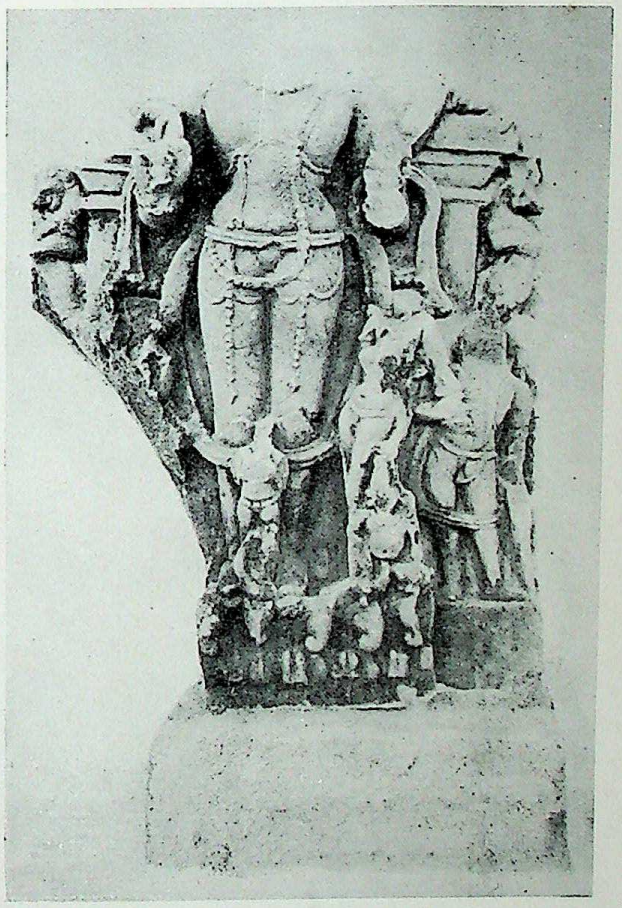

(ख) सूर्य; ११वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर

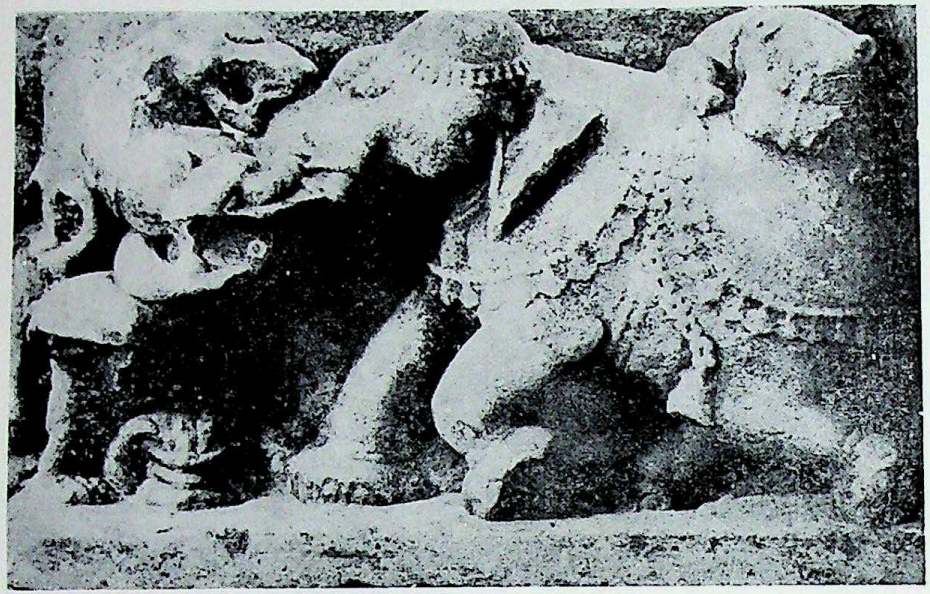

(क) चौखट का खण्ड; १०वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर

(ख) गजशार्दूल; ११वीं शती ईस्वी; कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) सुरसुन्दरी; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

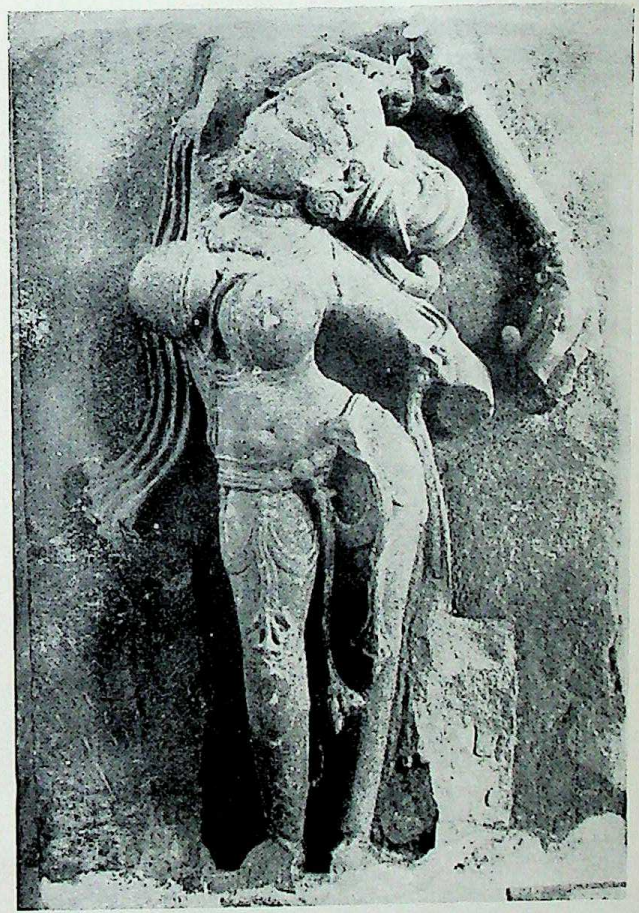

(ख) सुरसुन्दरी; १०वीं शती ईस्वी;
कारीतलाई, जिला जबलपुर

(क) ऋषभनाथ; १२वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

(ख) चन्द्रप्रभ; १२वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

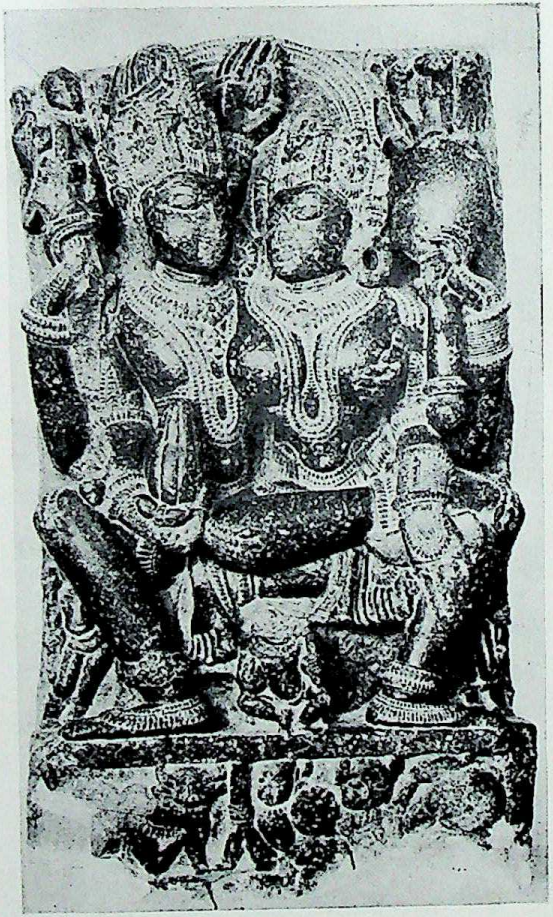

(क) उमामहेश्वर; १२वीं शती ईस्वी;
रतनपुर, जिला बिलासपुर

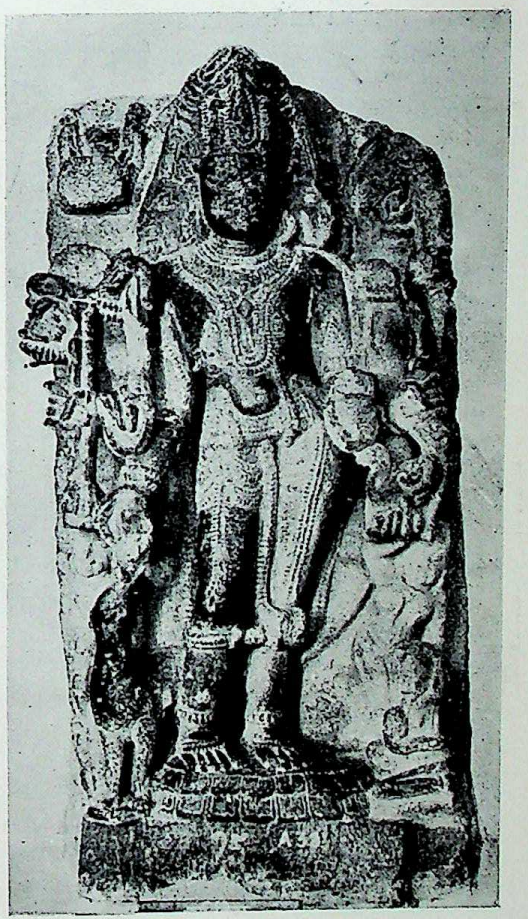

(ख) कार्तिकेय; १२वीं शती ईस्वी;
गोमरी, जिला बिलासपुर

(क) विष्णु; ११वीं शती ईस्वी; डीपाडीह, जिला सिरगुजा

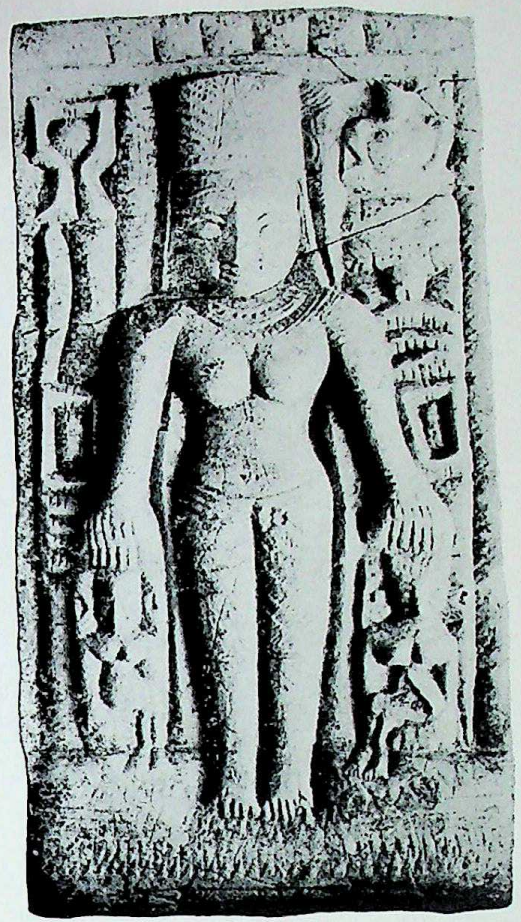

(ख) पार्वती; ११वीं शती ईस्वी; सिरपुर, जिला रायपुर

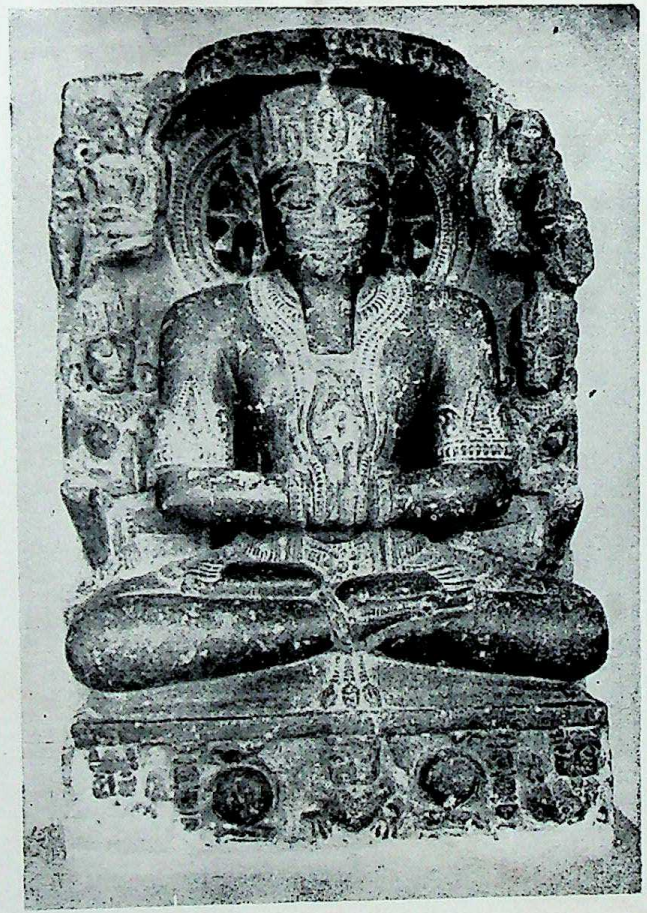

(क) राजपुरुष; १२वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

(ख) चामर धारिणी; १२वीं शती ईस्वी; रतनपुर, जिला बिलासपुर

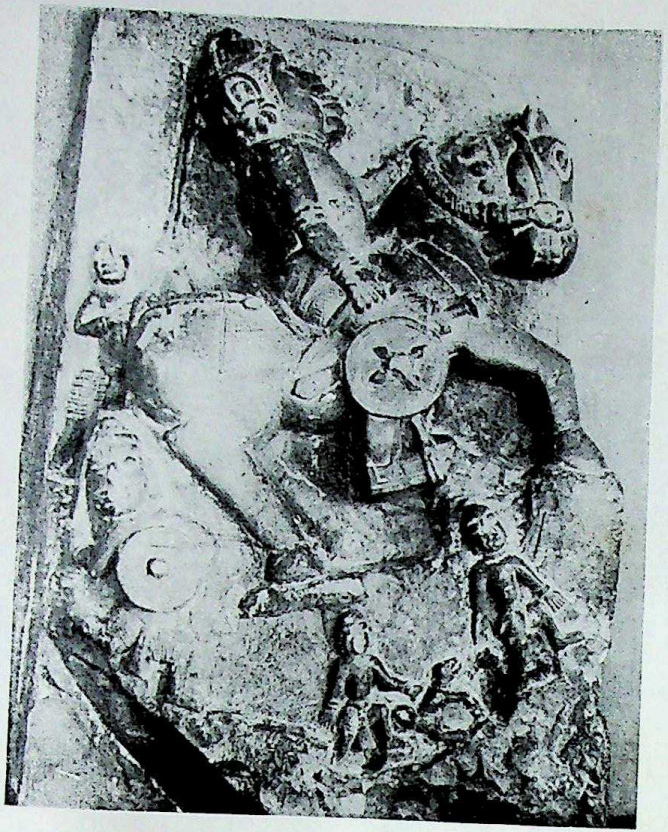

(क) गोंड़ योद्धा; १६वीं-१७वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

(ख) गोंड योद्धा; १६वीं–१७वीं शती ईस्वी;
सिरपुर, जिला रायपुर

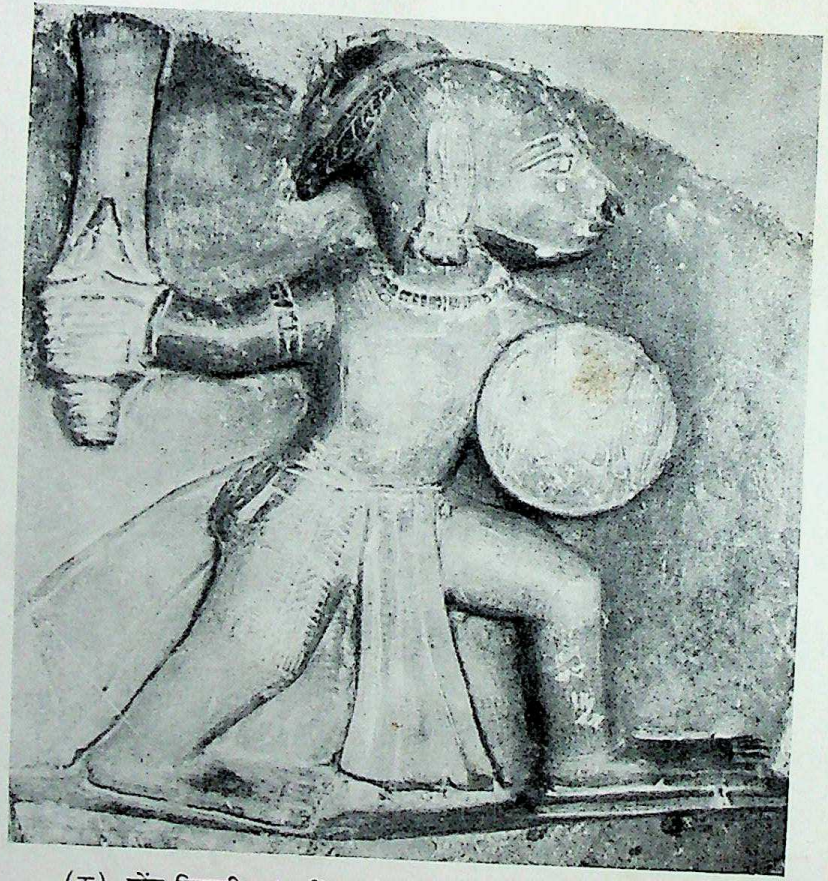

(क) गोंड़ सिपाही; १६वीं-१७वीं शती ईस्वीं; सिरपुर, जिला रायपुर

(ख) गोंड़ सिपाही; १६वीं-१७वीं शती ईस्वी
सिरपुर, जिला रायपुर

चित्रफलक तेईस

चित्रफलक चौबीस

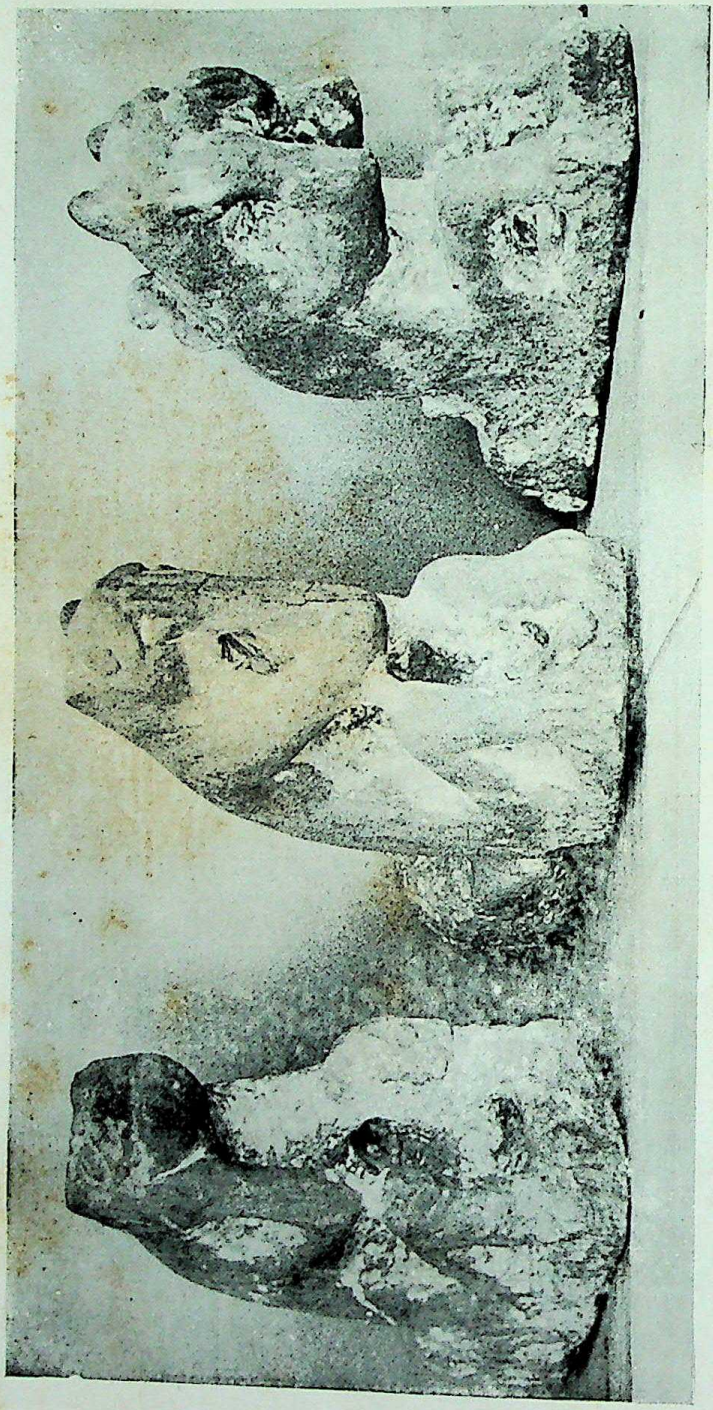

बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत कहो ; १६वीं १७वीं शती ईस्वी; राजनांदगांव, जिला दुर्ग

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर

के

प्रकाशन

१. महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में सुरक्षित उत्कीर्ण लेखों की विवरणात्मिका सूची

२. लिस्ट आफ क्वाइन्स डिपाजिटेड इन दि एम० जी० एम० म्यूजियम रायपुर (अंग्रेजी)

३. महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय (उद्भव, इतिहास और प्रवृत्तियां)

४. मानवशास्त्रीय उपविभाग प्रदर्शिका

५. प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

६. पुरातत्त्व उपविभाग प्रदर्शिका

७. पुरातत्त्व उपविभाग का सूचीपत्र भाग २, पाषाण प्रतिमाएं

८. पुरातत्त्व उपविभाग का सूचीपत्र भाग ३, धातु प्रतिमाएं

९. पिक्चर पोस्ट कार्ड (विभिन्न सेट)